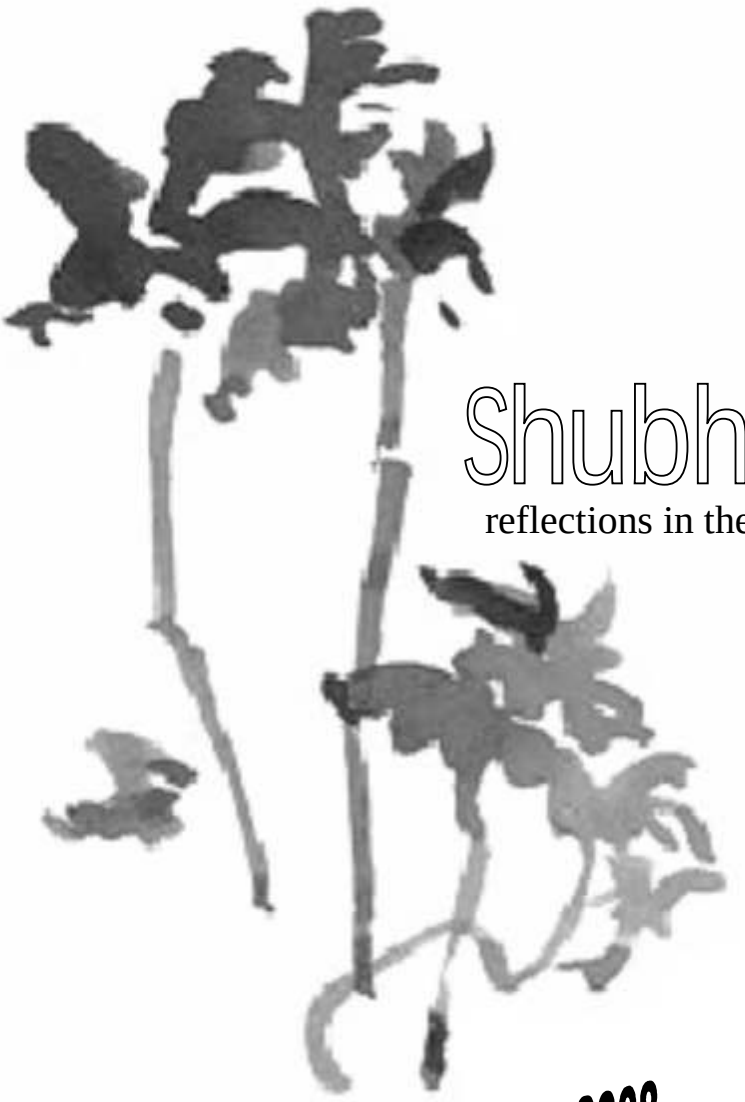

# ShubhAchari

reflections in the quagmire of action
for transformation

**issued in February 2008**

This is a private circulation for internal discussions only.

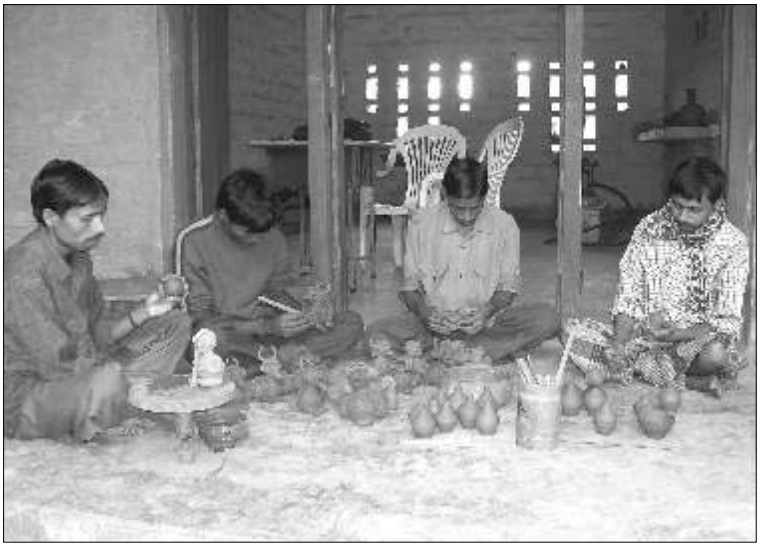

# अंदर पढ़िए


| | | |
|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय | 4 |
| 2. | महान कर्मयोगी प्रो. शुभाचारी दासगुप्ता | 5 |
| 3. | Gandhi, Tagore inspired Baba Amte | 6 |
| 4. | मदभरी जिज्ञासा | 7 |
| 5. | पीड़ित के प्रयास से भ्रष्ट C.E.O का तबादला हुआ | 8 |
| 6. | चालाक कौआ | 8 |
| 7. | Changing Significance of Words and Colours | 9 |
| 8. | Top Ten Most Polluted Places in the World, 2007 | 10 |
| 9. | PIDT's Role in Arresting Global Warming | 11 |
| 10. | कृषि समस्या का समाधान - जैविक खेती | 12 |
| 11. | भूमि का दान | 14 |
| 12. | A Visit to PIDT's Ghazipur Field Area | 15 |
| 13. | प्रकृति और जीवन | 17 |
| 14. | विवेक बंधन-मुक्त करता है | 18 |
| 15. | संथाल समाज में विवाह का रिवाज | 19 |
| 16. | महिला दक्षता विकास | 20 |
| 17. | छोटे हाथ, बड़े काम | 20 |
| 18. | दहेज-मुक्त विवाह का एक सफल प्रयास | 21 |
| 19. | गुलाब स्वयं सहायता समूह - कोगड़ो | 23 |
| 20. | Quotable Quotes | 23 |
| 21. | The India You May Not Know | 24 |
| 22. | समिति के माध्यम से ग्राम कालाजोर का कायाकल्प | 25 |
| 23. | चेतना स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों ने पेय जल समस्या का समाधान किया | 26 |
| 24. | Perils of Our Generation | 27 |
| 25. | ग्राम करमाटॉड में आपसी विवाद सुलझाया गया | 28 |
| 26. | तुम तूफान समझ पाओगे? | 28 |
| 27. | हमारे गांव में जली शिक्षा की ज्योति | 29 |
| 28. | सूक्तियाँ | 29 |
| 29. | Basic Data Sheet — District Deoghar, Jharkhand | 30 |

# सम्पादकीय

इस पत्रिका का नाम शुभ-आचारी, शुभ का अर्थ अच्छा और आचार का अर्थ कार्य / आचरण, **पीड़ित** कार्यक्षेत्र के अनुभवों को परख कर रखा गया है। **पीड़ित** कार्यकर्त्ताओं द्वारा लिखे गये लेख सम्पूर्ण **पीड़ित** परावर्तन को व्यवहार में बदलने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

यह इस पत्रिका का प्रथम संस्करण है जो हमारे प्रिय संस्थापक प्रो. शुभाचारी दासगुप्ता जिन्हें प्रायः **'पीड़ित दासगुप्ता'** कहा जाता है, के देहान्त के एक वर्ष पश्चात् प्रकाशित किया जा रहा है। जैसाकि उनका नाम था, उनका हर क्षण रचनात्मक विचार और कार्य बन जाता था। प्रो. दासगुप्ता पॉलो फरेरे, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, इलिच आदि के विचारों से प्रभावित थे। आदिवासी लोगों व दलितों ने भी उन्हें प्रभावित किया। उन्होंने कठिन परिश्रम किया और आप सभी लोगों के सहयोग से वे अपने सपनों को वास्तविक रूप देने में सफल रहे।

जैसाकि गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा ''मृत्यु प्रकाश को नहीं मिटा सकती है, यह केवल दिये को बुझा सकती है, क्योंकि सवेरा हो गया है।'' जैसा पिछले साल देखा गया, हम सभी ने कठोर परिश्रम किया अच्छे और समर्पित कार्यों के उत्साह को हाँसिल करने के लिए, उस रास्ते पर चलते हुए जो हमारे प्रिय 'सर' ने हमें दिखाया।

मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि यह पत्रिका हमारे संस्थान को और देश के जिन पिछड़े क्षेत्रों में हम काम कर रहे हैं वहाँ के सीमान्त लोगों को आन्तरिक रूप से एक सूत्र में बाँधने का काम करेगी। हमें अपनी दुविधाओं और चुनौतियों को एक-दूसरे के साथ बाँटने के लिए इस पत्रिका का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि हम भलाई के कार्य में लगे हुए हैं।

प्रो. दासगुप्ता की हँसी और उनकी सकारात्मकता ने कई लोगों को प्रभावित किया, चाहे वह जनजातियों का गढ़ छत्तीसगढ़ हो या उड़ीसा हो या वॉशिंगटन डी.सी. के चमकते-दमकते गलियारे हों। कमजोर लोगों के प्रति उनकी सहानुभूति और उनका प्यार साफ दिखाई देता था। हमेशा अपूर्ण कार्यों के प्रति करुणा रहित 'सर' की इच्छा को आप में से बहुत से लोगों ने महसूस किया होगा। आपने यह भी महसूस किया होगा कि 'सर' आपके करीब हैं और आपको राह दिखाने के लिए तत्पर हैं।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि हमेशा हमारे विचारों, शब्दों और कार्यों में पूर्णरूपेण एकता होनी चाहिए। हमारे उद्देश्य हमेशा विचारों की शुद्धता में होने चाहिएं। अगर हम ऐसा कर सकें तो हमारा आने वाला कल बहुत सुन्दर होगा। यही वह रास्ता है जो मेरे पति ने मुझे सिखाया। वे सत्य की ओर अकेला चलने में कभी नहीं डरे-चाहे उनका लक्ष्य पहुँच से बाहर क्यों ना दिखाई दे रहा हो। मुझे वह दिन आज भी याद है जब उन्होंने अपना सूट उतार दिया और धोती पहन ली जो मैंने उनके लिए सिली थी। फिर उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। यह पत्रिका प्रो. दासगुप्ताजी के इस देश के लोगों और लोगों के व्यावहारिक ज्ञान में अखण्ड विश्वास को समर्पित है।

मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि **पीड़ित** के सभी साथी और साथिन इस पत्रिका का उपयोग अनुमान लगाने और उन अनुमानों को कार्यों में तबदील करने में करेगें। इसके साथ-साथ हमने जो हमारे मिशन और विजन निर्धारित किये हैं और समानता पर आधारित चिरस्थायी भविष्य के लिए किये जा रहे कार्यों से भी हम सीखेंगे।

आशा है आप सभी लोग मन लगाकर काम करते रहेंगे, सोचते रहेंगे और लिखते रहेंगे।

-आपकी दीदी

**डॉ. अपर्णा दासगुप्ता**

**अध्यक्षा, पीड़ित**

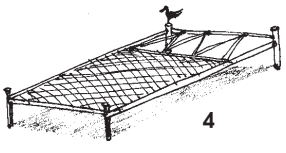

# महान कर्मयोगी प्रो. शुभाचारी दासगुप्ता

❋ अखिलेश कुमार तिवारी

**लीक-लीक गाड़ी चले, लीकै चले कपूत।**
**बिना लीक तीनों चलें, सायर, सिंह सपूत।।**

इस कहावत को कार्यान्वित करते हुए पी.आई.डी.टी. (पीड़ित) संस्था के संस्थापक प्रो. दासगुप्ता जी भारत के विभिन्न प्रदेशों में निवास कर रहे समाज के दलित, पीड़ित, शोषित निर्बल वर्ग, विशेष रूप से महिलाओं, बच्चों, अनुसूचित जातियों, जन-जातियों तथा आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के ग्रामीणों के सर्वांगीण विकास एवं सशक्तिकरण के लिए वैकल्पिक सोच पैदा कर उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का सराहनीय एवं उत्कृष्ट कार्य करते रहे। अपने इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने पी.आई.डी.टी. (पीड़ित) स्वयंसेवी संस्था की स्थापना सन् 1980 में की। उनके जीवन में त्याग और समर्पण का यह सबसे बड़ा उदाहरण है कि वे अपनी सोच, उद्देश्यों और विचारों को कार्यरूप देने के लिए सरकारी सेवा से त्याग-पत्र देकर पूर्ण रूप से समाज सेवा में समर्पित हो गये।

वर्तमान में 'पीड़ित' संस्था के विभिन्न विकासोन्मुखी कार्यक्रमों से भारत के विभिन्न प्रदेशों के लगभग 600 गाँवों के लोग प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हो रहे हैं। वे अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा एवं महान आचरण के कारण सरकारी एवं गैर-सरकारी तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में विभिन्न उच्च पदों को सुशोभित करते रहे। उनके महान व्यक्तित्व, कृतित्व एवं आदर्शों को देखकर किसी कवि की ये पंक्तियाँ उनके जीवन को चरितार्थ करती हैं:

**सुख भोग खोजने आते सब। आये करने तुम सत्य खोज।।**
**जग की मिट्टी के पुतले जन। तुम आत्मा के मन के मनोज।।**
**जड़ता हिंसा स्पर्धा में भर। चेतना अहिंसा नम्र ओज।।**
**पशुता को पंकज बना दिया। तुमने मानवता का सरोज।।**
**बहुभेद विग्रहों में खोई। ली जीर्ण जाति क्षय से उबार।।**
**तुमने प्रकाश को कहा प्रकाश। और अंधकार को अंधकार।।**

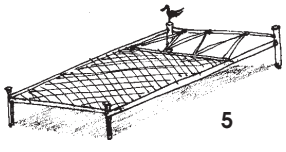

# Gandhi, Tagore inspired Baba Amte

Had fate not willed otherwise, Murlidhar Devdas Amte could have ended up as just another wealthy, arrogant lawyer wallowing in luxury. This eldest son of a Brahmin landlord, born on December 26, 1914, at Hinganghat in Wardha district, was completely insulated from the world of abject poverty and the inequalities of the prevailing social structure.

When he was a mere 14 years old, Amte or Baba as he was affectionately called by his family, had his own gun to hunt wild boars and deer. During his college days in Nagpur, he would travel in a Singer sports car with leopard skin-covered seats, and buy two tickets when he went to watch a film—one for himself and the other to stretch his legs on. He indulged his passion for cinema by writing film reviews and also corresponded with the then reigning Hollywood stars Greta Garbo and Norma Shearer.

A visit to Santi Niketan and his brush with Tagore's world of poetry and music and later his association with Mahatma Gandhi changed Baba. While poetry transformed him into a sensitive person, his understanding of Bapu's relationship with God in the form of truth, love, morality and fearlessness inspired him to break the shackles of a secure life and dedicate it to the underprivileged masses.

Baba did well as a lawyer and took up criminal cases for the well-heeled during his practice at Durg in then MP. But he was appalled by the fact that his clients often expected him to tell lies. "A client would admit he committed rape and I was expected to obtain an acquittal. Worse still, when I succeeded, I was expected to attend the celebration party," Baba once recounted. He started working for Harijans in his own fields although he was not expected to mingle with them.

With six leprosy patients, Rs.14 in hand and a lame cow, Baba went ahead to set up the Maharogi Sewa Samiti in 1949 at a time when leprosy patients were shunned and left to suffer supposedly for sins committed in a previous life. After shifting to Warora in the early 1940s, he set up Anandvan (Forest of Joy), the first fully integrated township for the rehabilitation of leprosy patients and people with disabilities. Today, Anandvan is spread over 176 hectares and houses 3,000-plus inmates. This ideal township demonstrated how persons with disfigured limbs could create a self-sufficient world of their own.

So sensitive was Baba Amte to the needs of Anandvan's inmates that he even developed roses without thorns so that a blind inmate could touch and feel the flower while enjoying its fragrance. Today, Anandvan boasts of an orchestra of 150 members—visibly impaired, deaf, dumb and lame singers and dancers who enthrall large audiences with their talents.

With his wife Sadhanatai standing by him through thick and thin, Baba went on to establish settlements in Somnath, Nagepalli, Hemalkasa and Ashokvan, camps with schools and colleges and hospitals for the tribals and poor in the inaccessible jungles of Gadchiroli district. His two doctor sons, Vikas and Prakash, and their equally qualified wives and grand-children are now keeping alive the flames of hope kindled by Baba who died recently.

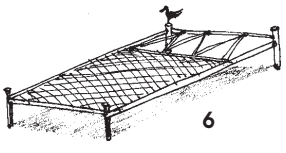

# मदभरी जिज्ञासा

मिट्टी से भरे जूते में
कर रहे बादलों की तहल ।
मस्तिष्क में तूफान मचा है
अंग जैसे प्यार के आँचल ॥

कैसे अंगड़ाई लिए जा रहे हैं
दिखाओ पतझड़ में रास्ता ।

सब साथियो मिलकर सोचो
निकलेगी चेतना की अभिलाषा ।
बसंत की नयी सृष्टि में
उत्सुक खोजो उमंग की आशा ॥

समानता और स्वावलम्बन की खोज में
भरो भुवन मण्डली में एक विलक्षण नशा ।

**- इंदिरा (बबली)**

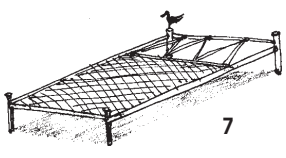

# पीड़ित के प्रयास से भ्रष्ट C.E.O. का तबादला हुआ

**⌘ अशरफ मोहम्मद**

शंकरगढ़ विकास खंड के अन्तर्गत C.E.O. पद पर विगत 2½ वर्ष से पशु स्वास्थ्य केन्द्र, शंकरगढ़ के डॉ. अजमेर सिंह पदस्थ थे। इनके रहते ब्लाक के बाबुओं एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा ग्राम पंचायतों के सरपंचों से भारी कमीशन लिया जाता था जिसकी कोई निश्चित सीमा नहीं थी। इनके विरोध में सरपंचों द्वारा जिलाध्यक्ष एवं क्षेत्रीय विधायक श्री सिद्धनाथ पैकरा को अवगत कराया गया, परन्तु C.E.O. के स्थानांतरण एवं अन्य कार्यवाही हेतु उनके द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया गया, क्योंकि C.E.O. अजमेर सिंह द्वारा उपरोक्त दोनों व्यक्तियों को प्रति माह कमीशन दिया जाता था। वह बाहर से C.E.O. पद का चार्ज लेने आने वाले अधिकारी को चार्ज न देकर रायपुर से स्टे करा लेते थे। ऐसी स्थिति में विकास खंड के सरपंच परेशान थे। इस बात को लेकर कई सरपंच, सचिवों ने पीड़ित वालों से भी चर्चा की। पीड़ित द्वारा सरपंच एवं पंचायत सचिवों की सामूहिक बैठक करने का सुझाव दिया गया। जब इससे सफलता न मिली तो पीड़ित द्वारा राज्य स्तर पर प्रयास करने का सुझाव दिया गया। सभी सरपंचों ने कुछ राशि गाड़ी किराया बाबत जमा करवाई एवं रायपुर जाने की प्लानिंग की। रायपुर के लिए 40 सरपंचों में से लगभग 25 सरपंच तीन मार्शल में चले।

रायपुर पहुंचने पर 'शंकरगढ़ बचाओ, अजमेर हटाओ' का नारा सड़कों पर घूम-घूम कर लगाया गया। अनुसूचित जनजाति मंत्री श्री गणेशराम भगत को लिखित प्रतिवेदन सामूहिक रूप से दिया गया। श्री भगत द्वारा सभी सरपंचों को प्रदेशाध्यक्ष (B.J.P.) श्री शिवप्रताप सिंह के पास ले जाया गया एवं वहां प्रदेशाध्यक्ष से चर्चा एवं बात हुई। मंत्री एवं प्रदेशाध्यक्ष ने मुख्य मंत्री डा. रमन सिंह को वस्तुस्थिति से अवगत कराया और तुरंत डा. अजमेर सिंह को स्थानांतरित करने का आग्रह किया। इसके बाद तत्काल कार्यवाही वहीं से प्रारंभ हुई। 15-20 दिन बाद डॉ. अजमेर सिंह को C.E.O. पद छोड़कर अपने मूल पद पर जाने का आदेश मिला। अजमेर सिंह बहुत कोशिश के बाद भी C.E.O. पद पर नहीं रह सके। यही नहीं, छत्तीसगढ़ के अन्य 14 पशु अधिकारियों को भी अपने मूल पद पर स्थानांतरित कर दिया गया। इनके स्थान पर दूसरा C.E.O. विगत् तीन माह से पदस्थ है तथा वर्तमान में पंचायतों का कार्य साधारण ढंग से चल रहा है।

## चालाक कौआ

एक अत्यन्त प्यासे कौए ने एक घड़ा देखा और पानी की आस में बड़े आनन्द के साथ उस पर आ बैठा। जब वह घड़े के पास पहुंचा तो वह बहुत दु:खी हुआ, क्योंकि घड़े में पानी बहुत कम था जिसे वह पी नहीं सकता था। उसने पानी तक पहुँचने के लिए वह सब कुछ किया, जो कुछ वह कर सकता था, लेकिन उसके सभी प्रयास व्यर्थ गये।

अन्त: में उसे एक तरकीब सूझी। उसने छोटे-छोटे पत्थर इकट्ठा करना शुरू किया और अपनी चोंच से एक-एक पत्थर घड़े में डालता रहा जब तक पानी उसकी पहुंच तक नहीं आ गया। इस प्रकार उसने पानी पीकर अपनी जान बचाई। इस कहानी से शिक्षा मिलती है - **आवश्यकता अविष्कारों की जननी है।**

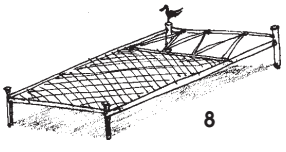

# Changing Significance of Words and Colours

❀ **Late Prof. Subhachari Dasgupta**

A few years ago, while walking in the streets of an Australian metropolis, I noticed several offices with boards which said 'Wholly Australian-owned business – We are proud to be so'. I recalled, a few years earlier, I saw Japanese cars in New York streets plastered with stickers and graffitis such as 'This car has deprived ..... Americans of Jobs'. I can not exactly recall how many American jobs were mentioned as taken by the Japanese car. What they were talking about was SWADESHI. Rabindranath Tagore has left us a treasure trove in the shape of songs, which he termed as SWADESHI (own country). May be, because of this Tagore's passing away was mentioned in the last page of the Anglo-Indian daily 'Statesman' as death of a 'Bengali' poet. Recent writings in the Statesman as many other English dailies show their aversion to the world SWADESHI, a word revered by millions of Indians who still remember yesteryears.

The aversion to the word reflects aversion to those who use the word with some veneration. This has come to be because certain political groupings have been using the world politically. The word should be used with some responsibility. Some words acquire deeper meanings and connote not only a meaning, but convey a heritage. SWADESHI is prominent among them. Another politically-charged word is SECULARISM. This is used by the politicians who use all manners of communal politics to achieve only their personal end. Both these words are in a way heritage words, for which many patriots have given their lives and their families suffered from the oppression of the British. Those, were some glorious years after centuries of invasions and foreign rule. I wish there was a law forbidding the use of these heritage words loosely for political gains. The word SWADESHI was perhaps first used in Kolkata when the Tagore family organised a SWADESHI Mela to give a boost to whatever SWADESHI industries there were at that time. Later, the word became pious by virture of it's expressive quality which could evoke images which inspired the youth.

**National interest comes first —** We would not give up this word simply because some political parties are polluting the word. On the contrary, I believe that we should live up to protect SWADESHI interest. I have shown this by Australian and American examples and as Mr. Clinton and all his predecessors always said, American interest comes first to them. We need not feel shy of fighting to preserve the SWADESHI interest in the wake of onslaught on our economy from the 'first world'. Instead of denigrating these words, we ought to internalise the meaning of these heritage words. The present-day newspaper writers are young people, who have been brought up in a society which is at least free. They perhaps do not know that for writing anything against the authorities they could be charged for treason in the good old days of the Raj. They also do not know that many establishments in their own cities would not allow them entry. The freedom that they enjoy today was largely based on that one word SWADESHI. SWADESHI did not mean only industry or commerce, but the whole personality and individuality of our people and nation.

Some people confuse between GLOBALISATION and UNIVERSALISM. These two words have entirely different meanings and have nothing in common. It is on a strong base of SWADESHI that universality can be built and such was the concept of Tagore, as well as of Gandhi. Tagore established Viswa Bharati while Gandhi inspired a generation of civil rights activists in the United States by what

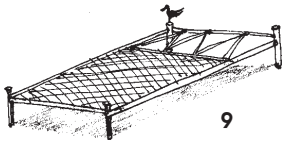

he did for his own country. If I have to give up the words such as SWADESHI and SECULARISM as the behaviour of many politically-interested people suggests, should we also give up the philosophies and activities they represent? On the contrary, it is time when use of these words should gain currency along with strengthening the movement to gain these two values. These are not only the two isolated words, but there are many such assertions which have lost their true meaning by purposive wrong usage.

If we, on the other hand, give up these words, we will also have to give up several colours. As a painter, it will be painful for me as I will have to give up colours such as SAFFRON since the RSS uses it and GREEN because the Muslim League uses it. WHITE will also have to be sacrificed since it is the central colour of the Congress. The RED also has to go from my palate as it is a communist colour. BLACK, of course, must go because WHITE lies are printed by using that colour. But, looking at all these colours, I cannot believe that they have lost their hues or their heritage, which has deeply affected the humankind. In desert country, GREEN symbolised hope and galvanised the Islam to conquer the mighty powers of the time. SAFFRON has been with us for centuries and is still revered by millions of people. It is not for no reason that these two colours are on our flag. They are there to remind us of the two values essential to human actuality.

When I was very young, there was a fervour for breaking out of religious fanaticism and many other taboos which littered our lives. My brother, who was also young, in order to gain bravado from us kicked at a picture of a goddess. My father, who was a philosopher, but not religious, called us and chastised my brother with these words 'You have not kicked at the goddess, but at the faith of millions of people. You have no right to do that'. Even today, I hold that as good. No one can gain that right here or elsewhere. So let us be careful with imageries, which words, colours or forms evoke.

# Top Ten Most Polluted Places in the World, 2007

This Top Ten list was compiled by the Technical Advisory Board of the Blacksmith Institute, an environmental NGO based in New York. The criteria used in ranking include the size of the affected population, the severity of the toxins involved, and reliable evidence of health problems associated with the pollution.

**Goodness Gracious! Two from India!**

**1.** ***Sumgayit, Azerbaijan —*** Forty factories that manufacture industrial and agricultural chemicals release 70-120,000 tons of detergents and pesticides into the air every year. Untreated sewage and mercury-contaminated sludge are dumped arbitrarily. ***2. Linfen, China*** — Severe air and water pollution from the coal, steel, and tar industries. ***3. Tianying, China*** — One of the largest lead production bases in China with average lead concentrations in the air and soils 8.5 to 10 times national health standards. ***4. Sukinda, India*** — Twelve chromite ore mines dump untreated water into the river, and over 30 million tons of waste rock have been dumped in the valley's river banks, which has resulted in severe water contamination. ***5. Vapi, India*** — There are over 100 industries covering over a thousand acres in the region that has contaminated local produce. ***6. La Oroya, Peru*** — Lead, copper, zinc and sulfur dioxide from mining have contaminated the town. ***7. Dzerzhinsk, Russia*** — A major Russian chemical manufacturing center, which produced Sarin and othe deadly poisons during the cold war. Between 1930-1998, nearly 300,000 tons of chemical waste were improperly disposed of. ***8. Norilsk, Russia*** — An industrial city in Siberia founded in 1935 as a slave labor camp, Norilsk is home of the world's largest heavy metals smelting complex and is plagued by severe air pollution. ***9. Chernobyl, Ukraine*** — The world's worst nuclear disaster took place on April 26, 1986. The 19-mile exclusion zone around the plant remains uninhabitable. ***10. Kabwe, Zambia*** — The country's second largest city is severely contaminated with lead from the mining industry.

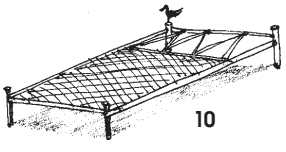

# PIDT's Role in Arresting Global Warming

**⌘ Prof. K.K. Sen**

Out of four major missions of People's Institute for Development and Training (PIDT) one is regeneration of environment as a means of sustaining human race. It advocates sustainable living which, in short, means using our resources in such a way that we do not endanger the future of our coming generations. For this, the critical issues are environment awareness, environment-friendly lifestyle, environment-friendly agriculture through organic manure, regeneration of herbal medicines and sustainable economy for self-reliance.

Under the High Yielding Varieties Program (HYVP), practiced by the country since mid-sixties involving use of inorganic fertilizers and agro-chemicals in increasing quantities our soil resources are being depleted day-by-day. As a result, soils in India are displaying signs of micro-nutrient deficiency which were earlier available in abundance. Now, the farmers have to use fertilizers containing zinc, iron, molybednum and copper compounds and trace elements for sustained yields in addition to usual nitrogen, phosphorus and potash. Not only that, fertilizers and agro-chemicals like nitrogenous fertilizers either leach into the ground or evaporate in the air thus contaminating our sub-soil water and air and resulting in global warming.

In order to arrest the above degenerative process, in its field areas in Jharkhand, Chhattisgarh, Uttar Pradesh and West Bengal, PIDT is advocating organic farming based on local varieties of crops like wheat, paddy and pulses. The farmers are being advised to use farmyard manure as a means of crop nutrition in addition to the usage of green manuring, blue-green algae, vermi-compost and bio-fertilizers. Farmyard manure and green manuring are the best sources of micro-nutrients besides being the providers of the main three elements - nitrogen, phosphorus and potash.

The farmers are being asked to include leguminous crops in the rotation so as to improve soil fertility. For plant protection, they are advised to practice inter-cropping. All these techniques are being developed and perfected at our Agricultural Experimental Station, PIDT Lokshala, Jagdishpur, District Deoghar, Jharkhand. Since tall local varieties require less amount of water than high yielding varieties, growing them itself saves a lot of water which can be used to grow crops on a larger area or can be put to other uses like quenching the thirst of animals or growing fodder for increased milk production.

During the last few years, with the help of people, PIDT has been able to construct 35 Water Harvesting Structures (WHS) for providing irrigation to the crops and other uses. As a consequence, the farmers over an area of about 483 acres are able to reap two-three crops where earlier they grew only one. They include one vegetable crop in the rotation which they sell in the local 'Hatia' (market) to earn ready cash. This has improved the economy of the farmers and financially they are better off as compared to earlier when they grew only one crop based on monsoon rains as there was not much soil moisture to enable them to grow the second crop.

In the last few years, PIDT has launched a compaign for afforestation which has borne fruit and the area is much greener now than before. Last year alone, more than 380,000 plants were planted

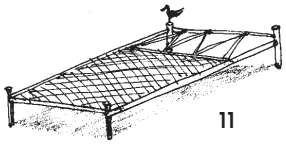

# कृषि समस्या का समाधान – जैविक खेती

❋ कृष्ण कुमार

आज से 61 साल पहले सन् 1947 में तत्कालीन प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रकाशित एक नई पत्रिका के प्रवेशांक के लिए दिए गए अपने संदेश में कहा था – 'सब कुछ इंतजार कर सकता है, लेकिन खेती नहीं।' इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि आजादी के बाद के वर्षों में खेती इंतजार ही करती रही सिवाए पहली पंचवर्षीय योजना के जिसमें कृषि, सिंचाई और बिजली को प्राथमिकता दी गई। एक समय था जब सकल राष्ट्रीय आय का 58 प्रतिशत कृषि से आता था, अब केवल 22 प्रतिशत आता है। इससे पता चलता है कि कृषि का दर्जा देश की अर्थव्यवस्था में कितना कमजोर होता गया है, बावजूद इसके कि देश की 60 प्रतिशत जनता अभी भी अपनी आजीविका के लिए खेती पर निर्भर करती है और 70 प्रतिशत से अधिक जनता अभी भी गांवों में रहती है।

सच तो यह है कि दूसरी पंचवर्षीय योजना से ही प्राथमिकताएं बदलने लगीं। सरकार द्वारा यह माना जाने लगा कि उद्योग को बढ़ावा देना अहम है और कृषि उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने वाला उद्यम ही रहेगी। जरूरत होगी तो पी.एल. 480 के अंतर्गत अमरीका से अनाज का आयात कर लिया जाएगा। 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद योजना की प्राथमिकताओं में एक बार फिर परिवर्तन करना आवश्यक हो गया तथा 'सुरक्षा और विकास' का नारा दिया गया। 1965-66 में भारत को भीषण अकाल का सामना करना पड़ा तो अमरीका भी भारत को अनाज देने में आनाकानी करने लगा। बाद के वर्षों में अधिक उपज देने वाली गेहूं और धान की बौनी किस्मों की खेती के फलस्वरूप भारत अनाज के मामले में आत्मनिर्भर हो सका तथा उसकी अन्न सुरक्षा किसी हद तक सुनिश्चित हो

---

in our Chhattisgarh and Jharkhand project areas. Farmers are being advised to grow fruit, timber and fodder plants. In Chhattisgarh, along with tree plantation, forest protection has been taken up on a large scale and more than 17,500 acres forest area has been protected. Plantation of medicinal and aromatic plants is being advocated in Jharkhand project area which has enabled people to get raw material for household remedies. Promotion of kitchen gardening has helped driving away malnutrition among women and children.

All this has been possible due to awareness generation among the people about the peril of global warming and the need for practicing sustainable lifestyle. Services of samities (village development committees) and Self-Help Groups (SHGs) have been enlisted for this purpose. All along, 'catch them young' has been the slogan of PIDT. During April 2007, PIDT started Eco-Clubs to educate young students about the need for environment regeneration and using their services for spreading the message among the masses. In Delhi too, students from more than 30 MCD schools participated in essay, poem and story competition on environment protection during Global Youth Service Day (GYSD) on April 20, 2007.

Thus, in its humble way, PIDT has been engaged in arresting the march of global warming. It requires tremendous effort on the part of all the organizations and individuals to put their best foot forward to complete this task.

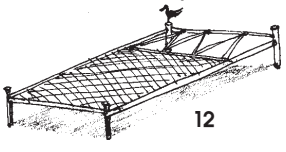

सकी, पर आज एक बार फिर कृषि क्षेत्र पर संकट के बादल छा गए हैं।

देश में दो लाख से अधिक किसानों द्वारा आत्महत्या बड़े कृषि संकट की ओर इशारा कर रही है। एक अध्ययन के अनुसार 40 प्रतिशत किसानों का कहना है कि यदि उनके पास कोई विकल्प हो तो वे खेती करना छोड़ देंगे। एक ओर कृषि संसाधनों - बीज, उर्वरक, कीटनाशक दवाओं, डीजल, कृषि यंत्रों – की कीमतों में अनाप-शनाप बढ़ोत्तरी हो रही है तो दूसरी ओर किसानों को उनकी उपज की लाभकारी कीमतें नहीं मिल रही हैं। कृषि और उद्योग क्षेत्र में व्यापार संतुलन बुरी तरह कृषि के विपरीत हो रहा है। हरित क्रांति के 40 वर्ष बाद नेशनल सैंपल सर्वे संगठन द्वारा जारी किए गए आंकड़े यह बताते हैं कि खेती पर आश्रित परिवारों की औसत मासिक आय केवल 2,115 रूपये है जो दिल्ली जैसे मैट्रो शहर में बर्तन साफ करने और झाड़ू लगाने वाली बाई की कमाई से भी कम है। इस आय में दो पशुओं और पांच सदस्यों के परिवार की गुजर-बसर किसी आश्चर्य से कम नहीं। फिर औसत मासिक आय केवल फसल से ही नहीं होती। इसमें वह आय भी शामिल है जो एक किसान परिवार को श्रमिक के रूप में कार्य करने से मिलती है। देश में केवल तीन राज्य – जम्मू-काश्मीर, पंजाब और तमिलनाडु – ऐसे हैं जहां किसानों की आमदनी राष्ट्रीय औसत से अधिक है। पंजाब में भी जिसे 'अन्न का कटोरा' कहा जाता है और जहां की संस्कृति ही 'कृषि' मानी जाती है एक किसान परिवार की औसत मासिक आय 3,200 रूपये मात्र है। ताजा अध्ययनों से पता चलता है कि कृषि उत्पाद 1985 की कीमतों पर बेचे जा रहे हैं। 23 साल से उनकी कीमत में कोई बढ़ोत्तरी न होना किसानों को आत्महत्या की ओर बढ़ाने का बड़ा कारण है।

पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. एस.के. मुदगल से हमने जब यह प्रश्न किया कि किसानों की दशा कैसे सुधरेगी तो उन्होंने कहा कि हमें ऐसे उपाय खोजने होंगे जिनसे कृषि की लागत घटे और किसान को उसकी उपज की लाभकारी कीमत मिले। कुछ ऐसी ही सिफारिश डा. एम.एस. स्वामिनाथन की अध्यक्षता वाले किसान आयोग ने की है जिसने कहा है कि किसान को उसकी लागत का डेढ़ गुना मिलना चाहिए। इस वर्ष गेहूं का समर्थन मूल्य 1,000 रूपये प्रति क्विंटल रखा जाना एक स्वागत-योग्य कदम है। यही नहीं, कृषि लागत एवं मूल्य आयोग ने आगामी खरीफ में उच्च किस्म के धान का समर्थन मूल्य भी 1,050 रूपये प्रति क्विंटल रखने की सिफारिश की है।

प्रश्न है - कृषि उत्पादन लागत कैसे घटे? अधिक उपज देने वाली गेहूं और धान की बौनी किस्मों की खेती के चलते यह संभव नहीं जिनमें अधिकाधिक मात्रा में उर्वरक और कृषि रसायन प्रयोग करने पड़ रहे हैं तथा मृदा संसाधनों का क्षय हो रहा है। अब देश की मृदाओं में सूक्ष्म और गौण तत्वों की भी कमी होने लगी है जो पहले बहुतायत से उपलब्ध थे। किसानों को अच्छी उपज के लिए नत्रजनीय, फास्फेटिक और पोटेशिक उर्वरकों के अलावा जिंक सल्फेट, फैरस सल्फेट, कापर सल्फेट, मोलीब्डेनम और गंधकधारी उर्वरकों का प्रयोग करना पड़ रहा है। फसलों की बढ़वार अधिक होती है तो कीट-पतंगों का प्रकोप भी अधिक होता है जिससे कीटनाशक दवाओं का प्रयोग भी बढ़ जाता है। पहले जहां गेहूं की फसल में दो-तीन सिंचाइयों से काम चल जाता था, अब पांच-छः सिंचाइयों की जरूरत पड़ती है। यही नहीं, प्रयोग किए गए नत्रजनीय उर्वरकों में से केवल एक-तिहाई ही फसल को मिलता है, बाकी या तो हवा में उड़ जाता है या सिंचाई पानी के साथ भूमि में रिस जाता है। नत्रजनीय उर्वरकों के साथ-साथ कीटनाशकों के भूमि में रिसन के चलते मृदा और भूमिगत जल प्रदूषण की समस्याएं विकराल रूप लेती जा रही हैं।

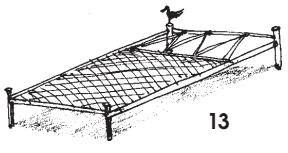

इन समस्याओं से निपटने के लिए गैर-सरकारी संगठन पीपुल्स इंस्टीट्युट फार डवलपमेंट एंड ट्रेनिंग (पीड़ित) ने अपने जगदीशपुर (जिला देवघर, झारखंड) स्थित परिसर में जैविक खेती के सफल प्रयोग किए हैं। पीड़ित लोकशाला द्वारा जैविक खेती की तकनीकों को आसपास के 100 गांवों में प्रसारित किया जा रहा है। इनके अंतर्गत किसानों को धान, गेहूं, दलहनों की स्थानीय किस्मों की खेती करने की सलाह दी जा रही है, क्योंकि किसानों के पास संसाधनों की कमी है। उनसे कहा जा रहा है कि वे फसल पोषण के स्रोत के रूप में गोबर-कंपोस्ट की खाद, हरी खाद, नील-हरित शैवाल, वर्मी कंपोस्ट और बायो उर्वरक प्रयोग करें। कंपोस्ट तथा हरी खाद में सूक्ष्म तथा गौण पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं तथा उनका किसानों को अलग से प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इनमें तीनों प्रमुख पोषक तत्व – नत्रजन, फास्फोरस और पोटाश – तो मिलते ही हैं। किसानों को फसल चक्र में दलहनी फसलों को शामिल करने की सलाह दी जा रही है जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति में बढ़ोत्तरी हो। चूंकि स्थानीय किस्मों को कम पानी की आवश्यकता होती है, इसलिए सिंचाई पानी की बचत होती है जिसे अन्य कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है।

लोकशाला को एक अन्य सफलता जल छाजन प्रक्षेत्रों के विकास में मिली है। अब तक ऐसे 35 प्रक्षेत्रों का विकास किया जा चुका है, जिससे 483 एकड़ में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध कराना संभव हुआ है। जिन तीन प्रकार के सिंचाई प्रकल्पों का निर्माण किया गया है उनमें जल संरक्षण संरचनाएं, उठान सिंचाई परियोजनाएं एवं पुराने सिंचाई कूपों का उद्धार शामिल है। इससे किसानों के लिए जहां पहले वर्षा पर निर्भर एक फसल लेना संभव था अब तीन-तीन फसलें लेना संभव हो गया है जैसे रबी में गेहूं, खरीफ में धान तथा जायद में सब्जियाँ या दलहन। इससे कृषि जिंसों के मामले में किसानों की आत्मनिर्भरता बढ़ी है। जहां पहले उन्हें अपनी खेती से साल में पांच महीने के लिए ही अनाज मिल पाता था, अब नौ-दस महीने के लिए मिल जाता है। सब्जियों की बाजार में बिक्री से अलग आय होती है। गांव में काम अधिक होने के कारण गैर-कृषि कार्य के लिए अब पलायन कम हो गया है। एक ऐसे समस्या-प्रधान क्षेत्र में जहां सिंचाई सुविधाएं नहीं थीं तथा अधिकतर जोतें सीमांत या लघु हैं, यह एक बड़ी उपलब्धि है।

पता चला है कि पीड़ित जैसे सफल प्रयोग कुछ अन्य गैर-सरकारी संगठनों ने अपने-अपने क्षेत्रों में किए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इन प्रयोगों का विस्तार किया जाए, ताकि देश की धरती शस्य-श्यामला बने, खेती की लागत घटे और किसान खुशहाल बने।

## भूमि का दान

संत विनोबा भावे अपने भूदान आंदोलन का प्रचार करते हुए अलीगढ़ के पिसावा गांव में पधारे। राजा श्यौदान सिंह ने भव्य जन सभा में उनका श्रद्धापूर्वक स्वागत किया। विनोबा ने उनसे अनुरोध किया, 'राजा साहब, आप मुझे गोद ले लें।' यह सुनकर सभी हंस पड़े। राजा साहब मुस्कराते हुए बोले, 'मुझे स्वीकार है।' धन्यवाद व्यक्त करते हुए फिर विनोबाजी ने कहा, 'पिताजी, अब आप मुझे अलग कर दीजिए। मैं आपका तीसरा पुत्र हूं, इसलिए केवल भूमि का छठवां हिस्सा दे दीजिए।' सभी चकित रह गए, पर राजा साहब भी वचन के पक्के थे। उन्होंने तत्काल दो हजार बीघा भूमि उन्हें दे दी। विनोबाजी ने यह जमीन भूमिहीनों को बांट दी।

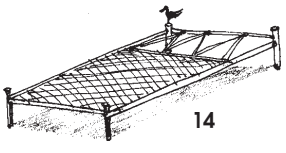

# A Visit to PIDT's Ghazipur Field Area

⌘ **Anand Pal Singh Gaur**

I visited PIDT, Karimuddinpur project area in Barachawar development block of district Ghazipur (U.P.) from 31st August to 5th September, 2007. During this small period at my disposal, I was able to observe rural people of villages of Barachawar block of Eastern U.P. from close quarters. The geographical conditions are favourable, but there is a huge gap between rich and poor. The area is very fertile and the major occupation is agriculture and dairy farming on small scale. Paddy, wheat and sugarcane are the main crops of the area. The major communities in this area are Bhumihar and Rajput, (Thakur) and the other communities are Rajbhar, Harijan, Brahmin, Baniya, Yadav etc. The area is dominated by Bhumihars and Thakurs. They occupy 90% land and the Dalit and other castes, hold only 10%. So, it's a huge gap between the upper castes and the lower castes. Rajbhar community is the biggest backward community in the area. The villages are too congested. People are forced to live in unhygienic conditions. The status of women and children is very bad. People migrate for employment. The new generation is showing less interest in farming. Cases of HIV/AIDS are emerging and increasing. Foeticide and use of ultrasound is in practice. Infrastructural facilities are very poor.

**Status of women—** Status of women in terms of economic, social, political and cultural terms, especially the women of Rajbhar, Chamar, Harijan and Other Backward Classes is very low. Violence against women, foeticide, misuse of ultrasound machines, trafficking of women for prostitution, dowry, veil system and high maternal mortality rate exist in the area. Girl's education and health is lagging behind. One positive thing is that marriage age is increasing.

**PIDT in Karimuddinpur—** PIDT has been working in Ghazipur district since 1978 when its spearhead team members visited the area for the first time. They saw that the area is inhabited by a vast number of poor people who mostly belonged to OBC and SC categories. Higher castes were represented by Thakurs and Bhumihars who were comparatively well off. Often the SCs were at the mercy of higher castes. They worked as bonded laborers in their fields. The level of education was very low.

PIDT spearhead team members launched programs like food security and land consolidation, water reforms, Dalit rights, equal wages for women, compaign against oppressive superstitions for awakening among the poor for their rights. In 1989, NFE program was started with 100 centers with the help of financial assistance from the Ministry of Human Resource Development, Government of India. In 1996, further 100 NFE centers were added.

With education, poor people of the area became aware of their rights. The age of marriage of girls increased as the incidence of child marriage reduced drastically. 200 Village Education and Development Committees (VEDCs) were formed which not only looked after the running of the NFE program, but also resolved numerous conflicts of villagers which included land and family disputes. A number of SHGs were formed to improve the economic condition of the poor villagers and help them take up economic activities. Through SHGs women were empowered politically, socially and economically. To give a further boost to economic activities, work for promotion of sericulture with the help of State Silk Department was taken up.

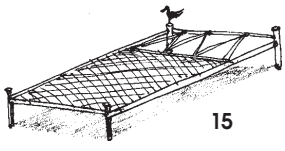

**Sericulture**

In 2002, spearhead team members contacted marginal farmers of villages around Karimuddinpur. They conducted a number of village-level meetings to generate awareness about sericulture among the poor and marginal farmers. They included Sarvanand Yadav of Kubri village in Mehsanpur nyay panchayat area, Koleshwar Singh Kushwaha of Chakfatma village in Unchadih nyay panchayat, Vishwanath Ram from Baddopur and Dayanand Kushwaha from Chandkur village in Karimuddinpur nyay panchayat. They discussed that the income from their limited farm holdings was very low and they could increase their income from silkworm rearing. Through these meetings, there was an awareness raised that they could take up mulberry cultivation on the boundaries of their agricultural land and on land unfit for agriculture. A number of farmers like Sarvanand, Koleshwar and Vishwanath etc. agreed to raise mulberry plants on the boundaries of their farms and farmers like Dayanand Kushwaha and Bhjuram used the land unfit for agriculture for mulberry plantation.

PIDT took initiative to arrange a workshop in collaboration with the State and the Central Silk Departments in which a number of highly qualified officers of District Silk Office along with officers of the Regional Silk Production Research Center, Dehradun participated. They not only gave instructions on mulberry cultivation and silkworm rearing, but also offered financial incentives like subsidy for the rearing house construction and provision of silkworm eggs and technical support to the farmers and assured that they will be buying cocoon, when it would be ready.

This prompted the farmers to take up silkworm rearing in large numbers as a source of extra income. With the availability of silkworm reeling facility at PIDT, Ghazipur office, the farmers are taking to silkworm rearing in large numbers. Those farmers who have taken up silkworm rearing have improved their economic status and are better off now as compared to the recent past. The District Silk Office functionaries visit the plantation site and offer help to the farmers.

In the beginning, five farmers were given a part of subsidy @ Rs.2000/- per farmer for building silkworm rearing house. The amount of subsidy and number of farmers receiving subsidy went up tremendously with the passage of time.

India is the second largest silk-producing country in the world. Over Rs.1,000 crore worth of silk is produced in India annually by more than 27 lakh people, over half of them being women. There is a huge export market too for silk cloth and garments. There are five commercial varieties of silk in India like Mulberry Silk, Oak Tasar, Tropical Tasar, Muga and Eri Silk out of which PIDT, Karimuddinpur is promoting Mulberry Silk in the project area. Ghazipur District, where PIDT is working has been declared prompt area for sericulture by the Central Silk Board. The area is much better for mulberry plantation. Sericulture is the major program of PIDT Ghazipur. PIDT is running this program through SHGs. This program is technically supported by State Silk Department under the Catalytic Development Program (CDP) of Central Government. The small farmers have started taking income through silkworm rearing with the use of small plots of wasteland. People belonging to Chamar, Yadav, Harijan, and Rajbhar castes are engaged in sericulture.

**Last Year's Achievements**

**33 farmers are continuing mulberry cultivation under the Catalytic Development Program (CDP) with the help of PIDT. 9 farmers are continuing silkworm rearing. 42,000 plants were grown through Kisan nursery and supplied to farmers. Re.0.50 per sapling was paid to farmers by Silk Department for whom the saplings were produced.**

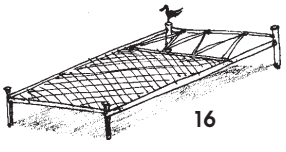

**Challenges—** Lack of coordination—There is a lack of coordination between the Central Silk Board and the State Silk Department. The Central Board wants to increase silk production in the country, but only can give technical support, while the resources are transferred to the State Silk Department which does not transfer them to the farmers in time of need, nor it provides them adequate infrastructure and equipment. Neither has it provided remunerative price to silk producers which is a big hindrance to the promotion of silkworm rearing in the area.

Lack of equipment, resources and modern technology— State Silk Department takes its own sweet time to take facilities to the farmers thereby decreasing eagerness of the farmers to take up silkworm rearing.

Lack of manpower— PIDT Karimuddinpur has only two persons in the office, while the area under their command is huge.

Lack of information and awareness— The farmers do not have information about the Central schemes and subsidy for silkworm rearing.

Lack of market— The farmers have a big challenge to market their products. PIDT Karimuddinpur is trying to help them through its limited efforts.

# प्रकृति और जीवन

**❀ इन्द्राणी गांगुली**

प्रकृति विचित्र है। कभी वह शांत, कभी भयंकर, कभी अभिमानी तो कभी आनन्द में खिलखिला कर झूम उठती है, तो कभी उसमें गहरी उदासी छा जाती है। प्रकृति का अपने आपको सजाने का तरीका निराला है। प्रकृति ने अपने विभिन्न रंगों के माधुर्य से मनुष्य के हृदय को स्पर्श किया है। प्रकृति के आंचल में अनन्त ज्ञान का भण्डार समाया है। विख्यात भौतिक विज्ञानी न्यूटन ने लिखा है। ''अनन्त ज्ञान के भण्डार में मैं एक बालक समुद्र के किनारे रेत पर कंकड़ चुन रहा हूं।''

मनुष्य का सुख और दुख प्रकृति में समाया है। यह अत्यन्त रहस्यमयी है। आज हमारे सामने एक प्रश्न उठ खड़ा हुआ है। क्या प्रकृति और मनुष्य में गहरा सम्बन्ध है? क्या वह गहरी अनुभूति है? इसका हल हमें स्वयं ढूंढ़ना होगा।

जीव विज्ञानी डार्विन के अनुसार मनुष्य प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ है। प्रकृति के बिना मनुष्य का जीवन धारण करना संभव नहीं है। मानव के प्राण प्रकृति पर अटके हुए हैं। इसी प्रकृति की गोद में जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, वनस्पति इत्यादि का निवास है।

किन्तु आज मानव इस प्रकृति को अपने सीमित स्वार्थों की खातिर असन्तुलित करने में लगा हुआ है। पेड़ों को काटा जा रहा है। प्रदूषण में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। हिमखण्ड पिघल रहे हैं। पूरे के पूरे पारिस्थितिकी तन्त्र को नष्ट-भ्रष्ट किया जा रहा है। इसी के परिणामस्वरूप प्रकृति ने भी अपना रौद्र रूप दिखाना आरम्भ कर दिया है।

भूकम्पों, चक्रवातों, सुनामी का आना, global warming के फलस्वरूप धरती का गर्म होना, ओजोन स्तर में कमी आना, greenhouse gases में बढ़ोत्तरी, U.V. light का धरती पर पहुंचना इत्यादि एक तरह से सभ्यता के विनाश की आशंका को व्यक्त करते हैं।

अब समय आ गया है सम्भलने का। हमें प्रदूषण पर नियन्त्रण करना ही होगा। पेड़ लगाने ही होंगे। यदि जंगल हरे-भरे होंगे तभी मानव जीवन भी हरा-भरा रह सकेगा। अतः हम प्रकृति को प्रदूषित होने से बचायें। प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे के परिपूरक हैं। किसी ने ठीक ही कहा है। "NATURE IS BEAUTY AND BEAUTY IS NATURE."

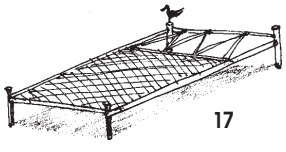

# विवेक बंधन–मुक्त करता है

कहते हैं कि एक बार बगदाद में एक संक्रामक बीमारी फैली। वहां के शेख को बताया गया कि बीमारी का कारण चूहे हैं। शेख ने इस तथ्य की जांच नहीं की, लेकिन उसके दिमाग में संदेह तो पैदा हो गया। उसने आदेश दिया जहां भी चूहे दिखें, उन्हें फौरन मार दिया जाए। एक बार उसे संशय हुआ कि उसी के मकान में चूहे हैं, तो उसने मकान जलाने की आज्ञा दे दी। परिवार में कोहराम मच गया। उसी समय वहां एक मसखरा पहुंचा। उसने शेख से कहा–बगदाद के बिलों में जितने चूहे नहीं हैं, उससे अधिक चूहे आपके सिर में हैं। बस फिर क्या था, शेख अपना सिर पीटने लगा। उसे अपने सिर में चलते और चीखते हुए चूहों का आभास हुआ। वास्तविक चूहों ने उसे उतना परेशान नहीं किया, जितना कल्पित चूहों से वह त्रस्त हो गया। यह स्थिति शेख की ही नहीं, प्रायः हम सभी की है। हम अपने विवेक को तिलांजलि देकर अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करते हैं। इसके फलस्वरूप एक दिन ऐसी स्थिति आती है कि हमें अपने किए पर पछतावा होने लगता है और तब हम पश्चाताप के पाश में बंध जाते हैं। विवेक वह कुंजी है, जो दिल-दिमाग की अलमारी को खोल देती है। विवेक बीज है और हमारी तमाम क्रियाएं उस बीज का वृक्ष हैं। विवेकहीनता से मनुष्य लोक मर्यादाओं और वर्जनाओं का उल्लंघन कर स्वयं अपने लिए कष्टप्रद परिस्थितियां निर्मित करता है।

अविवेक और दुश्चिंतन, दोनों ही तन–मन को प्रभावित करते हैं। विवेक की मौजूदगी मन को स्वस्थ बनाती है और तन को भी विकारों से बचाती है। हमारी आधी रुग्णता तो हमारे दुश्चिंतन और विवेकहीनता से पैदा होती है। इसी कारण मानसिक बीमारियों का जन्म होता है। कहते हैं कि जिसकी विवेक की झोली खाली हो जाती है, उसका जीवन समस्याओं का चौराहा बन जाता है और इस चौराहे पर ठिठका मन बुद्धि को रुदन भरी पगडंडियों में घसीट ले जाता है। विवेक के अभाव में मन जहां–तहां अपना आसरा ढूंढता है। हमारा मन स्वभावतः अस्थितर होता है। खुली हवा में रखे दीपक की लौ की भांति विविध दिशाओं में डोलना उसकी प्रकृति है। दीपक की लौ के समान अस्थिर मन अपनी समस्त ऊर्जा को विकेंद्रित कर देता है। परिणामतः मन एक सीमित दायरे में बंधकर रह जाता है। असल में अपने द्वारा निर्मित यही बंधन उसको तिलमिलाता रहता है, पर सवाल है कि मन को साधा कैसे जाए? इसका एक उपाय है कि अभ्यास से मन पर काबू पाना सीखा जाए। वीणा के तार ढीले छोड़ दिए जाएं, तो वीणा से मधुर स्वर नहीं निकल सकते। मधुर संगीत सुनने का इच्छुक संगीतज्ञ ही उन तारों को सम्यक रूप में व्यवस्थित करता है। तब वीणा से फूटने वाला संगीत स्वयं को भी आनंद देता है और संपर्क में आने वालों दूसरों को भी सुख प्रदान करता है। कबीर ने कहा है :

**मन सार मनसा लहरी बूढ़े बहुत अचेत। कहहिं कबीर ते पहुंचि है जिनके हृदय विवेक।।**

अभिप्राय यह है कि विवेक के प्रकाश से मन को भर लो, तो सारी भटकन और सारा रुदन बंद हो जाएगा। मुश्किल यह है कि हम सब प्रकार से समर्थ और बुद्धिमान होते हुए भी अपना विवेक खो देते हैं, फलस्वरूप उपहास के पात्र बन जाते हैं। प्रत्येक परिस्थिति में विवेक का आसरा लेने वाले ही सबके प्रिय और आदरणीय भी होते हैं तथा संतुष्टि के सुख का आस्वादन भी करते हैं। विवेक मनुष्य का विश्वस्त मित्र है। विवेकहीन मन चंचल भी होता है, जैसे अनाज के दाने जब तक हांडी में कच्चे रहते हैं तब तक उछलते, कूदते, उफनते रहते हैं। एक स्थान पर स्थिर नहीं हो पाते। किंतु जब वे पक अथवा थक जाते हैं, परिपक्व हो जाते हैं, तब शांत हो तल में बैठ जाते हैं। यही स्थिति विवेकशील मन की है। जिन मनुष्यों के पास विवेक रूपी सारथी है, उन्हीं के मन के अश्व सीधी गति में चलते हैं, नियंत्रित रहते हैं और लक्ष्य सिद्धि में सहायक बनते हैं।

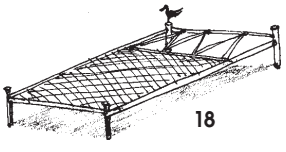

# संथाल समाज में विवाह का रिवाज

❀ विक्टर पाल मुर्मू

जब लड़का-लड़की विवाह की उम्र में पहुंचते हैं, तब दोनों पक्षों के अभिभावक एक बरतूहार (अगुवाई) को चुनते हैं। अगुवाई का काम है दोनों पक्षों की खबर का आदान-प्रदान करना। जब दोनों पक्षों के बीच बात पक्की हो जाती है तो लड़के वाले 50-150 तक आदमी लड़की के घर छेंका (Engagement) के लिए आते हैं। सभी लोग कपड़े (साड़ी, शाल), चप्पल तथा सिंगार की वस्तुएं देते हैं और खस्सी भोज खाकर लौटते हैं।

उसी दिन लड़की वाले भी लड़के के घर जाने की दिन-तारीख तय करते हैं। 3 से 7 दिन के अन्दर लड़की पक्ष के मेहमान भी लड़के के घर जाते हैं और लड़के को धोती, शर्ट, पेन्ट पीस देते हैं। यहां भी भोज का आयोजन होता है तथा विवाह की तिथि तय की जाती है। संथाल समुदाय में छेंका के बाद 9 महीने का समय शादी के लिए लगता है, क्योंकि इस बीच दोनों पक्षों के गांवों में प्रचार (Bann, Announcement) होता है। अगर किसी को किसी तरह का एतराज हो जिससे शादी में विधिवत बाधा हो तो 3 सप्ताह के अन्दर खुलासा करे, अन्यथा जीवन भर के लिए चुप रहे।

3 सप्ताह या एक माह के अन्दर लड़के वाले बारात लेकर लड़की के गांव पहुंच जाते हैं। इसके बाद बारात का स्वागत किया जाता है (ढोल ढाक, गाना बजाना के साथ)। स्त्रीष्ठान संथाल ढोल ढाक व्यवहार नहीं करते हैं। लड़के को नहलाया जाता है। लड़की पक्ष की महिलाएं लड़के को नहलाती हैं। इसके बाद आदर के साथ बारात को मंडवा के नीचे लाते हैं और यहीं पर शादी की रस्म पूरी होती है। हिन्दू संथाल में मांझी, परगना परानिक की उपस्थिति में बोंगा बुरू को हान्डी प्रदान करते हैं, सिंदूर दान के द्वारा विवाह सम्पन्न होता है। लड़के को उसके बहनोई कंधे पर लेते हैं और लड़की को बड़ी डलिया (दाउड़ा) में बिठा कर उठाया जाता है। इसी क्रम में सिंदूर दान लड़के द्वारा होता है। संथाल क्रिश्चन में बारात के स्वागत के बाद गिरजा घर में बैठाते हैं और यहीं पर पादरी द्वारा शादी के मंत्र पढ़ाए जाते हैं और अंगूठी (चांदी की) के आदान-प्रदान द्वारा शादी की रस्म पूरी हो जाती है। बाद में मंडप के नीचे दूल्हा-दुल्हन को बैठाकर सामान देते हैं जिसे संथाली में 'बॉन्दापोण' कहते हैं। इसके बाद सब मेहमानों को भोज खिलाकर विदाई की रस्म होती है।

**विशेष टिप्पणी** - 1. शादी एक पारिस (Title) में नहीं होती है। 2. संथाल समाज में दहेज प्रथा का चलन नहीं है। 3. पुनर्विवाह केवल तलाक या किसी की मृत्यु के बाद ही होता है। यह विवाह बहुत साधारण और कम खर्च में होता है। 4. पुनर्विवाह में गांव का मुखिया (मांझी- हाड़ाम) दोनों पक्षों का बन्दोबस्त करता है। इसमें अगुवाई नहीं होती है।

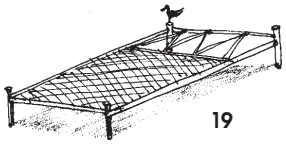

# महिला दक्षता विकास

❖ लक्ष्मीकांत पांडे

ग्राम छोटा चरपा, पंचायत बाघमारा, प्रखण्ड मधुपुर पीड़ित लोकशाला से दक्षिण में 15 कि.मी. दूर है। गांव में कुल 51 परिवारों में 230 की जनसंख्या है। 60 आदिवासी एवम् 170 पिछड़ी जाति के घटवाल समुदाय के लोग तीन टोलों में विभाजित हैं। सर्वप्रथम गांव में सम्पर्क कर शिक्षा की जानकारी ली। जहां पुरूष अपना नाम आदि लिख सकते थे, महिलाएं बिलकुल निरक्षर थीं। गांव में बैठक कर वृक्षारोपण हेतु कार्यक्रम किया गया, जिसमें महिला सदस्यों की भागीदारी नहीं थी। गांव में शिक्षण हेतु बच्चों के लिए एक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र खोला गया। साथ ही, माता-पिता की समिति भी बनाई गई जिसमें नियमित बैठक द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक मुद्दों के साथ-साथ महिलाओं की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की गई। एक महिला समूह का गठन किया गया जिसमें गांव के ज्यादातर सदस्य ऋण लेकर समय पर अपना काम करते थे। धान होने पर महाजनों द्वारा ज्यादा धान की वसूली की जाती थी। महिलाएं समूह में आपसी विचार-विमर्श द्वारा अपनी बचत से स्वयं अपनी समस्या निबटाने लगीं और महाजनों से ऋण लेना बन्द कर दिया।

तत्पश्चात समूह की महिलाओं में से फुलिया दे एवम् शान्ती देवी चापाकल की मरम्मत का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी पंचायत के चापाकल की मरम्मत करने लगीं। ये सभी महिलायें पहले घर से निकलती तक नहीं थीं, अब अपने काम हेतु प्रखण्ड स्तर पर भी जाती हैं। वे सभी बताती हैं कि पढ़े-लिखे न होने के बावजूद भी पीड़ित द्वारा हमें ऐसी प्रेरणा मिली कि हममें किसी तरह की कठिनाई से स्वयं निपटने की क्षमता बढ़ी एवम् हम किसी तरह का संकोच किये बिना कहीं भी आ-जा रही हैं। हम सबका रास्ता दिखाने के लिए हम सभी महिलाएं, पीड़ित संस्था की आभारी हैं। पीड़ित आगे हमें प्रेरित करे, यही हम सबकी कामना है।

# छोटे हाथ, बड़े काम

जब आप स्कूल के बाद घर के कार्यों में मदद करते हैं तो आप घर में झाड़ू लगाने और बर्तन साफ करने आदि के कार्य करते हैं। अगर आप 100 साल पहले बड़े हुए होते तो आप कभी भी स्कूल नहीं जा सकते थे। आपको पूरे समय काम करना पड़ता, बस काम ही काम। नीचे दिये बच्चों से सम्बन्धित कुछ कार्य इस प्रकार हैं जो पुराने जमाने में इंगलैंड में किए जाते थे:

**चिमनी की सफाई** - 16 से 18 साल तक के छोटे बच्चे चिमनियों पर ऊपर चढ़ते और वहाँ जमी कालिख को झाड़ू से साफ करते थे। वे अक्सर एक दिन में 12 घण्टे काम करते थे।

**मछुआरों के सहायक** - ये लड़के मछुआरों को मदद करते थे। वे कांटों में चारा लगाते, जाल खींचते और खाना बनाते थे।

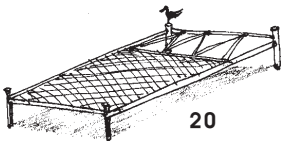

**शल्य चिकित्सकों के सहायक** - ये बच्चे शल्य चिकित्सक के सहायक के रूप में सेना के जहाजों पर काम करते थे।

**ऑफिस बॉय** - किशोर बच्चे ऑफिसों में पेन्सिल छीलने, लिफाफे चिपकाने, फर्श साफ करने और समाचार पत्रों को बेचने का काम करते थे।

**पाउडर मंकी** - ये बच्चे जंगी जहाजों और किलों पर काम करते थे और युद्ध के समय तोपों तक बारूद पहुँचाने का काम करते थे।

**वेंडर** - ये बच्चे अधिकतर शहर की गलियों में सामान बेचते थे। वहाँ पर ये समाचार पत्र बेचने, चपाती बेचने का काम करते थे। लड़कियाँ भुट्टे बेचती थीं।

**वाटर बॉय** - खेती करने वाले और भवन निर्माताओं के समूह वाटर बॉय रखते थे जो उनके लिए पानी ले जाते थे।

# दहेज–मुक्त विवाह का एक सफल प्रयास

**⌘ सदानन्द तिवारी**

आज से करीब डेढ़ दशक पूर्व से गाजीपुर जिले में अर्न्तगत विकास बराचवर क्षेत्र में मैं सामाजिक कार्य पीड़ित संस्थान के एक प्रहरी के रूप में करता आ रहा हूँ। इसी तारतम्य में कई गांवों में दहेज प्रथा को लेकर अनेक प्रकार की विसंगतियां देखने को मिल रही हैं। इस दहेज रूपी दानव के ताण्डव को देखने से ज्ञात हो रहा है कि यह आज के परिवेश में गांव, क्षेत्र, प्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे देश में सुरसा की तरह मुंहबाये खड़ा है।

आज देश में प्रत्येक व्यक्ति के सामने यही प्रश्न है। यदि हम नारी की हीन दशा, उसकी अधोगति, उसकी दुर्दशा उसके प्रति किये जा रहे अत्याचार, अन्याय और उत्पीड़न पर समय रहते विचार नहीं करते, उसे इन सब कष्टों से मुक्त नहीं कराते तो निश्चय मानिये कि हमारा देश व समाज पतन के एक ऐसे गर्त में गिरने जा रहे हैं जहां से निकलना मुश्किल है।

एक-दो वर्षों से हर समाचार-पत्र में पढ़ने को मिलता है कि नव-विवाहिता के पिता की ओर से मोटी रकम न दिये जाने के कारण नव-विवाहिता को जलती आग में ढकेल दिया गया या पेट्रोल छिड़क कर जला दिया गया। इस क्षेत्र में भूमिहार, ब्राह्मण, अहीर जातियों में नव-विवाहिता वधु द्वारा मोटी रकम नहीं लाने पर उसके सास, देवर, पति अनेक प्रकार से यातनाएं देकर घुट-घुट कर मरने पर विवश कर रहे हैं। हम लोग अपने मन में इन सब बुराइयों, पापों और अत्याचारों को मिटाने की इच्छा रखते हुए भी कुछ कर नहीं सकने में विवश हैं।

चूंकि क्षेत्र में क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं का सहयोग हमें नहीं मिल पा रहा है, इसलिये अनेक कुरीतियां और रूढ़ियां फैली हुई हैं। समाज में अनेक प्रकार की बुराइयों को जड़ से काटने हेतु क्षेत्रीय सक्रिय कार्यकर्ताओं की जरूरत होती है। आज के परिवेश में हम सोचते हैं कि सरकार हमारी सामाजिक बुराइयों को दूर कर देगी। कानून इन बुराइयों को समाप्त कर देगा, परन्तु ऐसी धारणा गलत है। जब तक संस्था के जुनून वाले कार्यकर्त्ता आम लोगों को समझाकर इन बुराइयों को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध नहीं होगें, तब तक सरकार भी इन पापों का अन्त नहीं कर सकेगी।

दहेज-विरोधी कानून सन् 1961 में ही बन गया था, लेकिन सारा कानून कागजी बनकर रह गया। जब तक रचनात्मक एवं सकारात्मक रूप से समाज को इन बुराइयों से निजात दिलाने का जुनून नहीं है, तब तक कुछ होने वाला नहीं है। आज के समय में सबसे अधिक अपमानजनक, लज्जास्पद एवं हानिकारक बुराई दहेज प्रथा है। आज के समय में सभ्य समाज को इसके दुष्परिणाम दिखाई नहीं पड़ते, यह बड़े आश्चर्य की बात है।

आज विज्ञान, तकनीकी, जनतंत्र, समाजवाद, स्वतंत्रता, समानता और सामाजिक न्याय का युग है। इस युग में भी लड़कियां मां-बाप के कन्धों पर भार बनी हुई हैं। परिवार में कन्या का जन्म अभिशाप माना जाता है। परिवार में कन्या सन्तान का मान शून्य के बराबर है। अभी दहेज को समाज में सम्मानपूर्ण दान की दृष्टि से देखा जा रहा है। वधु पक्ष वर पक्ष को कुछ तो स्वेच्छा से देता है, पर बाद में उसके पति एवं घर के सदस्य नव-विवाहिता को यातनाएं देकर उसके प्राण सुखा देते हैं। यही विषमता हमारे समाज में समुद्र की तरह गहरी होती जा रही है। दहेज रूपी अजगर

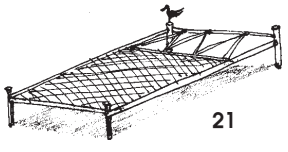

ने मनुष्य के ईमान-धर्म को निगलना आरंभ कर दिया है। गांव स्तर पर तथा दीवारों पर नारे, कविता, नुक्कड़ एवं एकांकी नाटक एवं कठपुतली ड्रामे को दिखाने पर इस दानव रूपी दहेज प्रथा को दहेज मुक्त में परिवर्तित करने का प्रयास समाज में कुछ जातियों में दिखाई पड़ रहा है।

अभी 5.12.2007 को ग्राम करीमुद्दीनपुर के एक खरवार परिवार की लड़की की शादी कष्टहरनी माता मन्दिर में ग्राम ताजपुर के लड़के से हमारी संस्था के लोगों के माध्यम से कराई गई तो सारे ग्रामीण अचरज में पड़ गये। उन लोगों को एक-दूसरे के बीच चर्चा करते हुए सुना गया। संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने अपने दुपहिया मोटर वाहन में पेट्रोल जला कर गरीब वर-वधु की दहेज मुक्त शादी कराने में अहम् भूमिका अदा की। दोनों पक्षों के लोगों ने इस दृढ़ प्रयास के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया और कहा कि **पीड़ित** संस्था आजीवन फले-फूले यही हमारी कामना है।

यह दहेजमुक्त विवाह कराने हेतु एक कुशवाहा (कोइरी) समाज के नवयुवक ने पीड़ित के प्रभारी श्री सदानन्द तिवारी के नेतृत्व में दृढ़ निश्चय कर लिया कि हम दहेज न लेंगे और न देंगे। ग्राम चकफातमा, पो. पातेपुर, जिला गाजीपुर, बाराचॉवर के मूल निवासी श्री कविन्द्र सिंह कुशवाहा से मिलकर दहेज मुक्त शादी कराने हेतु प्रस्ताव सन् 2004 फरवरी को रखा और लड़के कविन्द्र ने पूरी सहमति दिनांक 25.3.2004 को हम लोगों को दी। उसने कहा हमें लड़की का पूरा बायोडाटा दें। हमने लड़की वालों से मिलकर पूरी जानकारी लेकर लड़के वालों को दी तो लड़का बहुत खुश हुआ कि लड़की इण्टर उत्तीर्ण है। इन सारे क्रियाकलापों के बाद 17 जून 2004 को दहेज मुक्त शादी पीड़ित संस्था के शाखा प्रभारी के मौजूदगी में हुई। वर्तमान में लड़का दिल्ली में रहकर 6,000 रूपये मासिक कमा रहा है और अपनी धर्मपत्नी के साथ जीवनयापन कर रहा है।

आइये, हम सब संकल्प लें कि दहेज को मिटाने के लिए हम अपना कदम बढ़ायेंगे। लड़कियों के लिए ऊंची से ऊंची शिक्षा के द्वार खोलेंगे। उन्हें रोजगार के अवसर तथा आर्थिक दशायें उपलब्ध कराकर स्वावलम्बी बनाएंगे। तभी नारी में स्वाभिमान की जागृति होगी। तभी उसे सम्मान मिलेगा। हमारी संस्कृति खोई हुई सुगन्ध पुनः प्राप्त करेगी।

जब तक सास यह बात याद नहीं रखेगी कि मैं भी एक दिन बहू थी तब तक इस दहेज रूपी दानव से पार पाना मुश्किल है। एक कविता के माध्यम से इस सभ्य समाज की आंखें खोलना चाहता हूं जो इस प्रकार है:

**लाखों घर बर्बाद हो गये, इस दहेज की होली में।**
**कितनी कन्याएँ बेचारी बैठ न पायी डोली में।**
**कितनों ने अपनी बेचारी कन्या के पीले हाथ कराने में।**
**कहाँ-कहाँ तक मस्तक टेके, आती शर्म बताने में।**
**अर्थी चढ़ी हजारों कन्या बैठ न पायी डोली में।**
**लाखों घर बर्बाद हो गये, इस दहेज की होली में।**
**उनको भी दुःख होगा, इसका अवसर आयेगा।**
**पापी यह दहेज का पैसा उनको नर्क ले जायेगा।**
**बुरा न मानो इनका पैसा सब जायेगा नाच और शराब में।**
**लाखों घर बर्बाद हो गये, इस दहेज की होली में।**

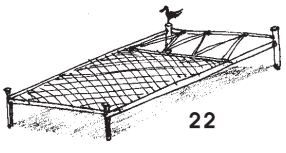

# गुलाब स्वयं सहायता समूह – कोगड़ो

❋ जीवन टुडू

ग्राम कोगड़ो पीड़ित लोकशाला जगदीशपुर से 6 कि.मी. दक्षिण में स्थित है। यह गांव तीन टोलों में विभक्त है:

(क) तैतिरियाटॉड़,

(ख) धावाटॉड़ एवं

(ग) कोगड़ो खास।

(क) तैतिरियाटॉड़ टोला में 22 परिवार आदिवासी समुदाय के निवास करते हैं जिनमें से तीन परिवार नौकरी करते हैं, एक परिवार सरकारी राशन की दुकान (डीलरशिप) चला रहा है।

(ख) धावाटॉड़ टोला में 25 आदिवासी परिवार रहते हैं जिनमें से 2 परिवार सरकारी नौकरी करते हैं, बाकी परिवार खेत-मजदूरी करते हैं।

(ग) कोगड़ो खास टोला में 5 परिवार भूमिहार, 10 परिवार बढ़ई, 10 परिवार मुहली एवम् 7 परिवार आदिवासी समुदाय के हैं। इस टोला में 32 परिवार रहते हैं जिनका मुख्य धंधा खेती एवम् मजदूरी है।

इस टोला में बढ़ई समुदाय के एक स्वयं सहायता समूह का गठन 29.09.04 को किया गया। इस समूह के गठन में काफी समय एवम् परेशानियों का सामना करना पड़ा। शुरू में पुरूष समूह को स्वयं सहायता समूह क्या है, इसकी जरूरत क्यों है, इसके बारे में व्याख्यान के माध्यम से समझाया गया। उस समय कुछ महिलायें घूंघट की आड़ से बातें सुन रही थीं। सामने आने या बातचीत करने से लजा रही थीं। जब पुरूषों ने अपने घरों में अपनी पत्नी एवम् बहू को समूह के बारे में बताया तथा उन्हें इस समूह से जोड़ने के लिए अपनी सहमति दी तो धीरे-धीरे महिला समूह से बात शुरू हुई। महिलाओं ने भी इस सम्बन्ध में अपनी इच्छा जताई। इस प्रकार महिला समूह का निर्माण हुआ।

अब इस समूह की महिलायें धीरे-धीरे जगरूक हो रही हैं। वे अपनी बढ़ती उम्र एवम् पर्दा छोड़कर समूह की बैठक में आती हैं तथा बाहरी जानकारी तथा कभी-कभार प्रशिक्षण लेने पीड़ित लोकशाला, जगदीशपुर भी पैदल चलकर आती हैं तथा अपनी जानकारी को आगे बढ़ाती हैं।

## Quotable Quotes

Two things one cannot get back—spent time and the lost opportunity.

***

Small opportunities are often the beginning of great enterprises.

—***Demosthenes***

***

We are made wise not by the recollection of our past, but by the responsibility for our future.

—***George Bernard Shaw***

***

My motto is: Contented with little, yet wishing for more.

—***Charles Lamb***

***

Friendship with oneself is all important because without it one cannot be friends with anybody else in the world.

—***Eleanor Roosevelt***

***

I must have a prodigious quantity of mind; it takes me as much as a week sometimes to make it up.

—***Mark Twain***

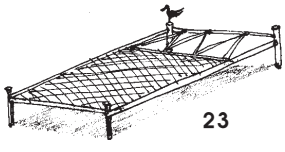

# The India You May Not Know

***Should progress be the brithright of only a handful?***

1. 71% or 770 million people are below 35 years of age. Indians are young.
2. 29 million people are born every year, 10 million die a year, population increase 1.8% per year.
3. 90% to 94% drop-out rate of children (including those who never went to school) between kindergarten and class 10+2.
4. India has 970,000 schools, China has 1,800,000.
5. 6% are the ones that cross the 10+2 stage, (Educational 'Line of Control') which is our so-called educated youth, go in for a regular college degree which may not be very relevant in today's context for the sake of employment generation and National GDP enhancement.
6. 72% of all graduates from the 15,600 colleges are Arts graduates. Balance 28% graduate in Science, Commerce, Engineering, I.T., Medical, Law, Management and special subjects.
7. India has 372 universities, China has 900 and Japan has 4000.
8. While 95% of the world youth between 15 to 35 years of age learn a vocation, a skill or a trade, with a choice of 2,500 vocational education and training (VET) programs, in India, we have only identified about 71 trades, after 60 years of Independence and hardly 2% of the population goes for formal VET training!
9. India has 11,000 ITIs and VET schools, China has 500,000 senior secondary vocational education and training schools.
10. We can get engineers and MBAs in India but no carpenters, plumbers, drivers, repairmen and other skilled personnel as per international standards!
11. Information Technology, Software or I.T. is the only exception, possibly due to 50,000 or more private I.T. training centers spread across the country.
12. I.T. & Software is only 1.5% of the world's GDP. India's present share is about 5%. For rapid economic growth and employment generation we need to concentrate on the balance 95% of the economy and enterprise and make it world class.
13. 300 million unemployed/employable age and only 45 million have actually registered with employment offices with little or no hope of getting employment (our estimates).
14. Of all new employment generated, 1% are Government jobs, 2% are in the organized sector and the balance 97% in the unorganized sector.
15. Out of our 430 million work force, 94% work in the unorganized sector and about 6% in the organized sector.

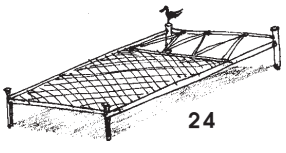

# समिति के माध्यम से ग्राम कालाजोर का कायाकल्प

**❋ प्रदीप कुमार मंडल**

कालाजोर एक बड़ा गांव है जिसकी जनसंख्या लगभग 3,500 है। गांव कई टोलों में विभक्त है, जैसे मुस्लिम टोला, भूमिहार टोला, यादव टोला, हरिजन टोला तथा रवानी टोला। हरिजन टोला में 22 परिवार हैं जिनके पास कुछ जमीन तो है, मगर आधी से ज्यादा जमीन गांव के महाजनों के पास बंधक थी। पूंजी तथा समझदारी के अभाव में ये लोग खेती पर ध्यान न देकर गांव के भूस्वामियों के यहां मजदूरी पर आश्रित थे। मजदूरी करना और किसी तरह से दिन काटना ही इनकी नियति थी। लोग काफी शोषित थे। महसूस करते भी थे, मगर लाचारी थी। जुबान बन्द थी।

ग्रामीणों की सामाजिक-आर्थिक अवस्था को देखते हुए उनकी मांग पर पीड़ित ने सर्वप्रथम इस गांव में शिक्षा का अलख अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से जगाया। गांव में समिति का गठन कर शिक्षक का चयन किया गया तथा ग्रामीणों को संगठित किया जाने लगा। समय-समय पर उन्हें विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण देकर जागरूक बनाया गया। गांव में महिलाओं को आर्थिक कार्यक्रम से जोड़ा गया। उन्हें प्रशिक्षण दिया गया, साक्षर बनाया गया तथा समूह में पूंजी उपलब्ध कराई गई। इससे खेती तथा पशुपालन के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी। बचत की आदत बनी। सामाजिक सौहार्द्र का माहौल तैयार हुआ तथा लोग एक सूत्र में बंधे।

ग्रामीणों की आवश्यकता को देखते हुए सन् 2001 में लघु उद्‌भव सिंचाई योजना का कार्य प्रारम्भ किया गया। जोरिया के किनारे जैसे ही कुआं खुदाई का कार्य शुरू हुआ, उसी गांव के एक ठेकेदार ने विभिन्न प्रकार से बाधा डालने का प्रयास किया। सर्वप्रथम यह काम उसने खुद अपने हाथ में लेने का प्रयास किया। जब उसे पता चला कि यह कार्यक्रम पीड़ित के द्वारा समिति के माध्यम से ही किया जायेगा तब उसने ग्रामीणों से उनकी कमाई का कुछ अंश वसूलने का प्रयास किया।

चूंक वह लोगों को काम देता था, इसलिए लोग उसका विरोध नहीं कर पाते थे, मगर असंतुष्ट होते थे। पीड़ित के प्रशिक्षण से उनकी हिम्मत बढ़ी तथा समिति की बैठक कर सामूहिक निर्णय से समस्याओं का समाधान करने की समझदारी आई। उसने कभी ग्रामीणों को फोड़ने का प्रयास किया तो कभी ठेकेदारी का काम शुरू कर कुआं का काम बन्द कराने का प्रयास किया, मगर ग्रामीणों का मनोबल बढ़ता गया और वे सफल होते गये।

कुआं खुदाई तथा जुड़ाई में ग्रामीणों ने अपनी सहभागिता से काम किया। कुआं निर्माण के बाद जब हरिजनों ने 2,275 फुट ट्रेंच खुदाई कर पाइप बिछाने का कार्य प्रारम्भ किया तो उस ठेकेदार ने कुछ लोगों से विरोध करा दिया कि हम अपनी जमीन से पाइप नहीं जाने देंगे, मगर समिति की बैठक में इस समस्या का भी समाधान हुआ। समिति का निर्णय था कि पानी सबको मिलेगा, सभी लोग खेती करेंगे। अन्य ग्रामीण लोग जिनकी वहां जमीन है, पानी पंचायत के सदस्य बन गए।

अंत में उद्‌भव सिंचाई योजना का कार्य पूरा हो गया। जोरिया का पानी 3,000 फुट की दूरी तथा 35 फुट ऊंचाई पर पहुंच गया तो लोग हैरान रह गये। ग्रामीणों के घर के पास पानी आ गया। आसपास के ग्रामीण इसे देखने आने लगे। सभी खुश हुए, पर ठेकेदार शान्त न था। उसने ग्रामीणों को फोड़कर मशीन अपने कब्जे में लेने का अंतिम प्रयास किया, मगर उसकी एक न चली। वह सफल नहीं हो सका। →

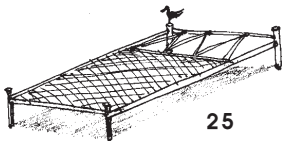

# चेतना स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों ने पेय जल समस्या का समाधान किया

**⌘ मो0 एनुल अंसारी**

जिला देवघर, प्रखण्ड मधुपुर के अन्तर्गत पंचायत जामागुडी के अन्तर्गत आदिवासी एवं हरिजनबाहुल्य जामागुडी गांव अवस्थित है जो पीड़ित लोकशाला जगदीशपुर से उत्तर दिशा में पांच किलोमीटर की दूरी पर है। इस गांव की कुल जनसंख्या 878 तथा कुल परिवारों की संख्या 121 है। यह गांव चार टोलों में बंटा हुआ है- 1. बेलाटांड़, 2. कुम्हरटोला, 3. प्रधान टोला एवं 4. नवाडीह।

उक्त गांव के टोला बेलाटांड़ में कुल 22 परिवारों के हरिजन (चमार) जाति के लोग निवास करते हैं जिनका जीविकोपार्जन का मुख्य पेशा मजदूरी है। उक्त टोले के पुरूष सदस्य बाहर कलकत्ता में जाकर राज-मिस्त्री के साथ कुली का काम करते हैं तथा महिलायें ईंट-भट्टे में मजदूरी करती हैं तथा अपना जीवन बसर करती हैं।

गांव में इन लोगों के पास खेती की जमीन नहीं है, मात्र घर और आंगन है। कुछ ग्रामीणों के पास पर्याप्त घर भी नहीं है। महिलायें दूर-दूर से पीने का पानी लाने के लिये जाती थीं। बरसात के दिनों में हरिजन बच्चे एवं महिला-पुरुषों को कई बीमारियों से ग्रसित होना पड़ता था।

उपर्युक्त समस्याओं से प्रभावित उक्त टोले की महिलाओं ने अपने टोले की समस्याओं के समाधान एवं स्वरोजगार हेतु कुछ करने का मन बनाया। पीड़ित लोकशाला के कार्यकर्त्ता की प्रेरणा से टोले की 10 हरिजन महिलाओं ने सामूहिक बैठक कर एवं सर्वसम्मति से निर्णय लेकर 'चेतना स्वयं सहायता समूह' का गठन किया। समूह के सदस्यों ने नियमित रूप से बचत एवं बैठक करना आरंभ कर दिया।

समूह की अध्यक्षा श्रीमती सुशीला देवी, पति हीरादास की अध्यक्षता में सभी सदस्यों ने बैठक कर सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि सबसे पहले हम लोग पेयजल की समस्या का समाधान करेंगे। इसके लिए पी.एच.ई.डी. लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के कार्यपालक अभियन्ता को आवेदन पत्र लिखा तथा सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर युक्त आवेदन मधुपुर कार्यालय में जमा किया। इस कार्य को सफल बनाने हेतु समूह सदस्य लगातार सम्बन्धित कार्यालय का दौरा करते रहे।

उनके अथक प्रयास एवं आपसी सहभागिता से एक चापाकल (Hand Pump) सरकार द्वारा दिसम्बर 2007 में स्वीकृत कर उनके टोले में चापाकल की बोरिंग की गई। इससे उक्त टोले में पीने के पानी की समस्या हल हो गई। इससे समूह के सदस्यों में आत्मबल का संचार हुआ। वे सशक्त और साहसी बने तथा उनमें किसी भी काम को हाथ में लेकर उसे सफलता तक पहुंचाने का विश्वास जागृत हुआ।

---

→ अंत में वह भी पानी पंचायत का सदस्य बन गया। अब वह सभी कामों में सहयोग करता है एवं सभी लोग मिल-जुल कर खेती करते हैं। पानी पंचायत से सभी सदस्यों को बारी-बारी से पानी उपलब्ध कराया जाता है। सभी सदस्य प्रति घंटा डीजल तथा पानी की बाबत 20/-रूपये चुकाते हैं। 20/- रूपये का हिसाब इस प्रकार है - मोबिल खर्च प्रति घंटा 5/-रूपये, 10/- रूपये कल-पुर्जो की क्षति-पूर्ति तथा 5/- रूपये रख-रखाव खर्च। समिति की राय से नरसिंह कोल को मशीन के रख-रखाव का भार दिया गया है।

ग्रामीण कृषि को बढ़ा रहे हैं। जब पूरी परती जमीन का विकास होगा, पूरा गांव हरा-भरा होगा, सभी लोग शान्ति से रहेंगे तो पीड़ित का सपना साकार होगा।

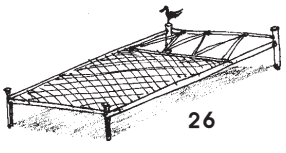

# Perils of Our Generation

**Global Warming**

Many scientists believe human-caused pollution is making the world a warmer place, a process called ***global warming***. Scientists also think pollution could contribute to a rise in the Earth's surface temperature over the next 100 years. A warmer world could mean big trouble. Hotter temperatures are causing some ice at the North and South Poles to melt and the oceans to rise. The warmer climate is changing our weather patterns and could result in dangerous tornadoes and droughts.

Climatic modeling studies generally estimate that global temperatures will rise a few degrees Celsius in the next century. Such a warming is likely to raise sea levels by expanding ocean water and melting glaciers and the polar ice cap. Recent studies have predicted that changes in global temperatures will introduce new infectious diseases, because species of animals to become extinct intensify storms, and increase the likelihood of droughts and floods.

**Greenhouse Effect**

The Earth stays warm the same way a greenhouse does. Gases in the atmosphere, such as carbon dioxide, methane, and nitrogen, act like the glass of a greenhouse: they let in the Sun's light and warmth, but they keep the Earth's heat from escaping. This is knwon as the ***greenhouse effect***. Scientists think that if too many of these greenhouse gases are released into the atmosphere, from pollution, for example, the gases can trap too much heat, causing temperatures to rise.

**Acid Rain**

***Acid rain*** occurs when rainwater is contaminated with pollutants like nitrogen oxide and sulfur dioxide. These gases come from fuels being burned at high temperatures, as in car exhausts. When acid rain falls, it can damage wildlife and erode buildings.

**Depletion of the Ozone Layer**

The ***ozone*** layer, a thin sheet of an invisible gas called ozone, surrounds Earth about 15 miles above its surface. Ozone protects us from the Sun's harmful rays. In recent years, the amount of ozone in the atmosphere has decreased, probably due to human-made gases called chlorofluorocarbons (CFCs). As the ozone level decreases, the Sun's rays become more dangerous to humans.

**Pollution**

***Pollution*** is the contamination of air or water by harmful substances. One source of pollution is hazardous waste—anything thrown away that could be dangerous to the environment, such as paint and pesticides. These materials can seep into water supplies and contaminate them.

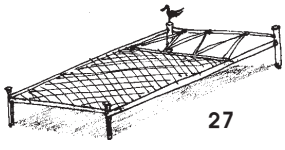

# ग्राम करमाटॉड में आपसी विवाद सुलझाया गया

❋ जीवन टुडू

पीड़ित लोकशाला जगदीशपुर से 5 कि.मी. दक्षिण दिशा में ग्राम करमाटॉड है। इस गांव में तीन जाति के लोगों का निवास है। इसमें दो टोले हैं – (1) करमजोरा आदिवासी, (2) हरिजन टोला।

करमाटॉड खास में भूमिहार लोग रहते हैं। इन लोगों का मुख्य धंधा खेती एवम् पशुपालन है। इनके पास अपनी खेती की जमीन काफी है। कुछ लोग दूध का व्यवसाय करते हैं। आदिवासी एवम् हरिजन परिवारों के पास जमीन कम है। सभी परिवारों की खेती से सालभर का अनाज नहीं होता है। इसलिए कुछ लोग भूमिहारों के पास मजदूरी करते हैं। उनमें से एक आदिवासी मदन किस्कू का पुत्र जमुना किस्कू बचपन से नरेश चौधरी नामक किसान के पास बगाली एवम् घरेलू कार्य करता आ रहा था। नरेश चौधरी भी उसे अपने हिसाब से मजदूरी देता था। लड़के का पिता भी उसके पास काम करता था। उसे भी मजदूरी मिलती थी। इस तरह जमुना किस्कू ने करीब 16 वर्ष तक नरेश चौधरी (किसान) के पास काम किया। इसी दौरान एक दिन (22 मई 2006 को) लड़के (जमुना किस्कू) का हाथ मवेशी के लिए चारा काटने की मशीन ने अंदर खींच लिया जिससे उसका हाथ कट गया। उसका इलाज नरेश चौधरी ने कराया।

एक दिन लड़के के पिता (मदन किस्कू) ने नरेश चौधरी के पास जाकर पुत्र के एक हाथ से विकलांग हो जाने के एवज में कुछ पैसे की मांग की। नरेश चौधरी ने उसे पैसा देने से इनकार कर दिया। वह बोला एक तो इस लड़के को बचपन से पाला-पोसा तथा हाथ कट जाने के बाद इलाज का सारा खर्च दिया, दूसरे आप पैसा मांगते हैं। हम कुछ नहीं दे पायेंगे। अगर आप हरजाना मांगते हो तो मैं दूंगा, लेकिन लड़के को काम से निकाल दूंगा।

इस घटना की जानकारी हमें मदन किस्कू द्वारा दी गई। हमने उसे सलाह दी कि आप गांव के दो-तीन मुख्य व्यक्तियों को इस घटना की जानकारी दें तथा उन्हें बैठक में आने को कहें। उसने वैसा ही किया। एक दिन बैठक बुलाई। इसकी एक चिट्ठी बनी। दोनों के इस चिट्ठी पर बैठक की सहमति के लिए हस्ताक्षर लिए, ताकि वे बाद में नहीं बोल सकें कि हमें इस बैठक की सूचना नहीं मिली थी।

बैठक 25.09.2006 को 12.00 बजे हुई। इसमें अगल-बगल के मुख्य लोग भी उपस्थित थे। सर्वसम्मति से विचार-विमर्श के बाद नरेश चौधरी को फैसला सुनाया गया कि आपको अंग क्षति पूर्ति के एवज में लड़के को एक जोड़ी बैल एवम् 1,000 हजार रूपये हर्जाना देना है। चौधरी ने इस फैसले पर अपनी सहमति दे दी। उन्होंने पांच दिन बाद एक जोड़ी बैल लड़के के पिता को दे दिये, लेकिन पैसा बाद में देने की बात कही। इस प्रकार दोनों के बीच समझौता हो गया।

### तुम तूफान समझ पाओगे?

❋ हरिवंशराय बच्चन

तुम तूफान समझ पाओगे?
गीले बादल, पीले रजकण,
सूखे पत्ते, रूखे तृण घन
लेकर चलता करता 'हरहर'...
इसका गान समझ पाओगे?
तुम तूफान समझ पाओगे?
गंध-भरा यह मंद पवन था,
लहराता इससे मधुबन था,
सहसा इसका टूट गया जो
स्वप्न महान, समझ पाओगे?
तुम तूफान समझ पाओगे?
तोड़-मरोड़ विटप-लतिकाएँ,
नोच-खसोट कुसुम-कलिकाएँ,
जाता है अज्ञात दिशा को!
हटो विहंगम, उड़ जाओगे!
तुम तूफान समझ पाओगे?

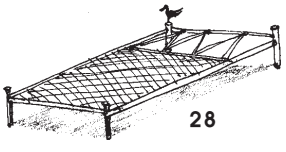

# हमारे गांव में जली शिक्षा की ज्योति

**⌘ जगन मोहली**

मेरा नाम जगन मोहली, पिता श्री महानन्द मोहली, ग्राम सुग्गापहाड़ी (मोहली टोला), पंचायत कल्हाजोर, पोस्ट मारगो मुण्डा, प्रखण्ड मधुपुर, जिला देवघर है। मेरा गांव सुग्गापहाड़ी सात टोलों में बंटा है। इस गांव के सभी टोलों को मिलाकर कुल परिवारों की संख्या सन् 2001 की जनगणना के अनुसार 240 है तथा जनसंख्या 1,297 है जिसमें 678 पुरूष एवं 619 महिलाएं हैं। इसी के एक टोले में जो मेरा टोला है (मोहली टोला) 30 परिवार निवास करते हैं। अधिकांश परिवार मोहली तथा कुछ परिवार संथाल हैं। ये दोनों जातियां आदिवासी श्रेणी में आती हैं।

हमारे टोले में साक्षरता एकदम नहीं के बराबर थी। हमारे गांव के रहने वालों का मुख्य व्यवसाय बांस की टोकरी बनाना तथा मजदूरी करना है। यहां पर शिक्षा के पिछड़ेपन को देखते हुए पीड़ित संस्था, जो हमारे गांव से लगभग 15 कि.मी. दूर पूरब-पश्चिम की ओर स्थापित है, द्वारा एक सामुदायिक शिक्षा केन्द्र संचालित किया गया। संस्था ने कुछ आर्थिक सहायताा एवं पढ़ने वाले बच्चों को शिक्षण सामग्री देकर मार्च 2004 में कार्य आरम्भ किया। केन्द्र में पढ़ाई का काम सभी ग्रामीणों की आपसी सहमति से मैं कर रहा हूं।

इस शिक्षा केन्द्र के खुलने के बाद गांव वालों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी है। सभी माता-पिता अपने बालक-बालिकाओं को इस केन्द्र में पढ़ने के लिए भेजते हैं। इस समय इसमें 15 बालक एवं 18 बालिका, कुल 33 बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। ये बच्चे राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा के ओ.बी.ई. कार्यक्रम के द्वारा, जो पीड़ित द्वारा संचालित है, पढ़ रहे हैं। वे यहां से समय-समय पर आयोजित होने वाली परीक्षाओं में नामांकन कराकर परीक्षा देते हैं तथा सफल होने पर प्रमाण-पत्र प्राप्त कर शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़कर आगे की पढ़ाई करते हैं।

पीड़ित संस्था द्वारा हमें जो प्रशिक्षण मिला है, उसके अनुसार हम बच्चों को मूल्य बोध शिक्षा देते हैं जैसे आपस में मिल-जुल कर रहना, भाईचारा, अनुशासन, सहयोग, देशभक्ति, स्वच्छता आदि। इस केन्द्र के संचालन के पहले ये बच्चे साधनों के अभाव में पढ़ाई छोड़ चुके थे। ऐसे ही जागरूकता बनी रही तो हमारा गांव भी दूसरे गांवों की तरह शिक्षा की मुख्य धारा ने जुड़ेगा। इसके लिए मैं और मेरे गांव के ग्रामीण पीड़ित संस्था का अहसान मानते हैं।

### -: सूक्तियां :-

मनुष्य की सच्ची परीक्षा विपत्ति में होती है।
**-महात्मा गांधी**

उन्नत चित्त वाले पुरुषों का यह स्वभाव है कि वे बड़ों पर महान पराक्रम दिखाते हैं, दुर्बलों पर नहीं।
**-विष्णु शर्मा**

इतनी संक्षिप्तता मत रखो कि अस्पष्ट हो जाओ।
**-ट्रायोन एडवर्ड्स**

मैं जितने दीपक जलाता हूं, उनमें से केवल लपट और कालिमा ही प्रकट होती है।
**-रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

अनर्थ अवसर की ताक में रहते हैं।
**-कालिदास**

शिक्षित व्यक्ति यदि चरित्रहीन हो, तब क्या उसे विद्वान कहेंगे? कभी नहीं।
**-सुभाषचंद्र बोस**

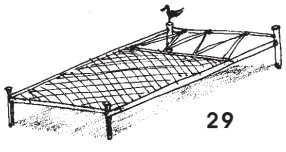

# BASIC DATA SHEET

## District Deoghar, Jharkhand

### (Source Census of India 2001)

**Population:**

Persons 1,165,390
Males 608,878
Females 556,512
Growth (1991-2001) 24.46%
Rural 1,005,539
Urban 159,851
Scheduled Caste population 146,863
Percentage to total population 12.60

Number of households 1,90,037
Household size (per household) 6

Sex ratio (females per 1000 males) 914
Sex ratio (0-6 years) 972

Scheduled Tribe population 1,42,717
Percentage to total poulation 12.25

**Literacy and Educational level**

Persons 469,652
Males 327,557
Females 142,095
Literacy rate
Percentage 50.09
Males 66.38%
Females 31.99%

**Literates Educational Level attained**

Total 469,652
Without level 11,055
Below primary 151,615
Primary 132,877
Middle 67,813
Metric/Higher Secondary/Diploma 80,065
Graduate and above 26,206

**Workers**

Total workers 432,714
Main workers 283,711
Marginal workers 149,003
Non-workers 732,676

**Age groups**

0 - 4 years 151,695
5 - 14 years 326,959
15 - 59 years 613,372
60 yeas and above (Incl. A.N.S.) 73,364

**Scheduled Castes (Largest three)**

1. Chamar etc. 68,806
2. Dom etc. 18,820
3. Musahar 12,017

**Scheduled Tribes (Largest three)**

1. Santhal 116,227
2. Mal Pahariya 8,251
3. Ho 6,788

**Religions (Largest three)**

1. Hindus 910,409
2. Muslims 221,705
3. Others 27,263

**Amenities and infrastructural facilities**

Total inhabited villages 2,356

**Amenities available in villages**

| | No. of villages |
|---|---|
| Drinking water facilities | 2,356 |
| Safe Drinking water | 2,355 |
| Electricity (Power Supply) | 289 |
| Electricity (domestic) | 248 |
| Electricity (Agriculture) | 9 |
| Primary schools | 768 |
| Middle schools | 156 |
| Secondary/Sr. Seconday schools | 49 |

| Important Towns | (Largest three) Population |
|---|---|
| 1. Deoghar (M) | 98,388 |
| 2. Madhupur (M) | 47,327 |
| 3. Jasidih (NA) | 14,137 |

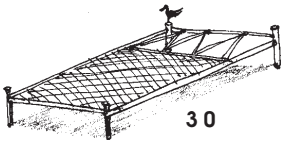

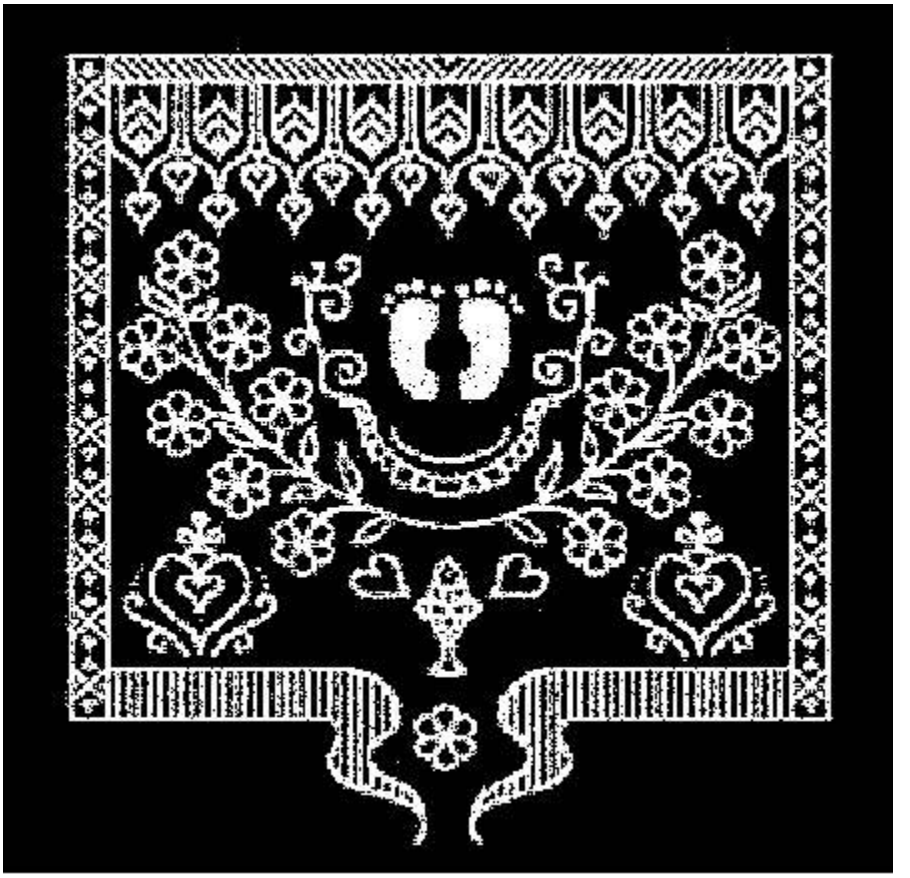

Collectively composed and cultivated by volunteers, associates and staff.


**People's Institute for Development and Training**
People's House
A 12 Paryavaran Complex, Maidangarhi Road, New Delhi-110030
Telefax: 91-11-29531296/82, 29532408, Fax: 29532995
E-mail: pidt@del6.vsnl.net.in
Websites: www.peoplesinstitute.com, www.volunteerindia.org


## *Field Offices*


**Jharkhand**
Lokshala
Village + P.O. Jagdishpur-815353
Via Madhupur, Distt. Deoghar
Telefax: 06438-284210, 09334310569
E-mail: pidtlokshala@gmail.com

**West Bengal**
Sanhati Vipani, Shop No. 65
Bolpur Municipal Super Market
P.O. Bolpur-731204, Distt. Birbhum
Tel: 03463-255250, 09434348447
E-mail: gpal4@rediffmail.com

**Uttar Pradesh**
Village + P.O. Karimuddinpur
District- Ghazipur-233225
Tel: 05493-283310

**Chattisgarh**
Village + P.O. Shankargarh-497118
Via. Rajpur District Sarguja
Tel: 07778-274855